वाणिज्य-सर्वस्व

प्रत्येक वस्तु की तेजी-मंदी जानने का
अपूर्व साधन

प्रथम खण्ड

ग्रन्थकर्ता
ज्योतिर्वित् पण्ड्या मोतीलालजी नागर
अर्धकाण्ड-वाचस्पति

प्रकाशक—
भविष्य-फल-मन्दिर, बनारस।

(सर्वाधिकार ग्रन्थकर्ता द्वारा सुरक्षित)

प्रथम संस्करण विक्रम सं० २००७ मूल्य १॥)

तेजी-मंदी-ग्रन्थमाला की प्रथम पुस्तक

सर्वतोभद्रचक्र की कुंजी।

इस छोटी सी पुस्तक में शुक्ल पक्ष की द्वितीया के दिन चन्द्रकी शृङ्गोन्नति देख कर, सर्वतोभद्रचक्र में व्यापारी वस्तुओं के वर्णादिपञ्चक पर वेध करने वाले ग्रहों और चन्द्र के परस्पर वेध के द्वारा कम से कम एक महीने की प्रत्येक वस्तु की तेजी-मंदी का सहज में ही निश्चय कर लेने का अतीव सुन्दर और सुगम प्रकार वर्णित है। मूल्य ।) चार आना।

पता:-भविष्यफल-मन्दिर, बनारस।

ज्योतिषशास्त्र के प्रवर्तक प्राचीन महर्षियों ने आजतक निरयण-गणनावश ही फलनिर्देश करने की विधि लिखी है। किन्तु "वाणिज्य-सर्वस्व"में ग्रन्थरचयिता ने दृश्यग्रहों पर से इस फलादेश का विवेचन किया है, जो सर्वात्मना परीक्षणीय है। यद्यपि भूत दृष्टान्त का समन्वय कर दिया गया है, तो भी यदि पञ्चाङ्ग की तरह वर्ष के प्रारम्भ में ही यह विवेचन गणित करके प्रकाशित कर दिया जाय तो इस से विज्ञों को विशेष सुविधा होगी, किन्तु यह सुपरिश्रमसाध्य है। मैं आशा करता हूँ कि, इसतरह के ग्रन्थ प्रकाशित होते रहने से जगत् में इस का विशेष प्रचार होगा और लेखक को भी इससे उत्साह मिलेगा।

पण्डित रामव्यास पाण्डेय

अस्सी, काशी ज्योतिषप्रधानाध्यापक, पञ्चाङ्गविभागाध्यक्ष काशी हिन्दू विश्वविद्यालय।

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
Acc. No. 237
Date 18.3.68

PH
133-5
NAS

काशीस्थ विद्वानों की सम्मतियाँ

श्रीयुक्त विद्वद्वर पण्ड्या मोतीलालजी नागर द्वारा प्रणीत "वाणिज्य-सर्वस्व" ग्रन्थ का प्रथम खण्ड मेरे सामने है। ग्रन्थकार को मैं बहुत वर्षों से जानता हूं। आपकी लगन बड़ी ही दृढ है। ज्योतिष के अर्घकाण्ड की खोज में आपने प्रायः अपना जीवन समर्पित किया है। ज्यौतिष शास्त्र का सर्वाङ्गीण मथन करके तथा प्राच्य—पाश्चात्य विद्वानों के मन्तव्यों की यथावत् आलोचना करके अनुभवी व्यवसायियों के अनुभवों को शास्त्र की कसौटी पर ठीक तरह से परख कर, अपनी प्रतिभाशक्ति से यह ग्रन्थ लिखा गया है। मुझे विश्वास है, पण्ड्याजी की यह तपस्या सिद्ध होगी।

विद्वद्गण तथा व्यवसायी सज्जन इस ग्रन्थ का समीचीन मनन करके यदि फलादेश तथा व्यवसाय करेंगे तो उन्हें १५ आना सिद्धि अवश्य होगी। जातक तथा ताजिक के फलादेश भी इसीप्रकार विभिन्न दृष्टिकोणों से परीक्षित होकर यदि प्रयुक्त हों तो मुझे आशा ही नहीं; किन्तु विश्वास भी है कि, ज्योतिषियों के व्यवसाय में अभूतपूर्व क्रान्ति होगी।

अन्त में मैं श्रीकाशीविश्वनाथजी से प्रार्थना करता हूँ कि श्रीपण्डयाजी चिरजीवी हों और इसीप्रकार अनेक ग्रन्थरत्नों का निर्माण कर सुयशोभागी हों।

महामहोपाध्याय, साहित्यवाचस्पति,

पण्डित नारायणशास्त्री खिस्ते

भूतपूर्व प्रिंसिपल तथा प्रधानाध्यापक

गवर्नमेंट संस्कृत कालेज, काशी।

Library IIAS, Shimla

00023747

मैंने "वाणिज्यसर्वस्व" के प्रथम खण्ड को साद्यन्त देखा। ग्रन्थकार ने ग्रहों के अंशान्तरात्मक दृष्टिसम्बन्धों की जो सयुक्तिक—सोपपत्तिक कल्पना की है, उसमें सायन-निरयन वाद का अविरोधी सामञ्जस्य भी है। फलजनक कालज्ञान के लिये दृष्टियों के दीप्तांश, क्रान्तिवश फलकी पूर्वापर कालावधि, शराधीन ग्रहों के जयपराजय की व्यवस्था, ग्रहों के शरपरिवर्तनों का पदार्थों पर सर्वोपरि प्रभाव; इत्यादि अनेक अनुपम साधनों का जो उपयोग किया गया है, उससे ग्रन्थकर्ता के अर्धकाण्डसम्बन्धी अनुसन्धनों में किये गये अथक परिश्रम की सार्थकता सिद्ध होती है। आशा है, व्यापारकार्य में अभिरुचि रखने-वालों के लिये यह ग्रन्थ सद्यःफलदायक सिद्ध होगा।

अनन्तभवन,
ऊँची ब्रह्मपुरी,
काशी।

ज्यौतिष-शास्त्र—मार्तण्ड
श्रीदाऊजी दीक्षित
दैवज्ञ-वाचस्पति, दैवज्ञ-चूड़ामणि

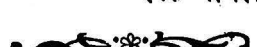

अर्धकाण्डवाचस्पति पण्डया मोंतीजालजी नागर के "वाणिज्य-सर्वस्व" को मैंने आपाततः अवलोकन किया। वास्तव में ग्रन्थकार की वर्णनशैली अपूर्व है। इस ग्रन्थ में प्राच्य एवं प्रतीच्य दोनों विभागों का आश्रय लेकर व्यापारी पदार्थों के समर्घ-महार्घ का उत्तम विवरण है। मुझे विश्वास है कि, इस के आधार पर व्यापारीजन अपना कार्य-संचालन करेंगे तो उन्हें बड़ी सफलता प्राप्त होगी।

पण्डित श्री अनूप मिश्र,
ज्यौतिषाचार्य-तीर्थ-रत्न-पीष्टाचार्य, साहित्यकेसरी,
ज्यौतिषप्रधानाध्यापक-गवर्नमेंट संस्कृत कालेज, बनारस।

मेरे परमसुहृद् अर्घकाण्डवाचस्पति श्रीयुत पण्ड्या मोतीलालजी नागर के "वाणिज्यसर्वस्व" को मुद्रितावस्था में देखकर परम हर्ष हुआ। इसमें लिखे गये ग्रहों के शर, क्रान्ति, दृष्टि आदि निर्णयोपयोगी साधनों के सम्बन्ध में ऐसे अनेक विचार मेरे दृष्टिगोचर हुए, जिनको नवीन अन्वेषण ही कहा जा सकता है। उन विषयों का प्राचीन ग्रन्थों में जो अस्तित्व है, वह अत्यन्त सूक्ष्मदृष्टिवाले व्यक्ति को ही व्यक्त एवं उपलब्ध होनेवाली वस्तु है। अतएव इसमें सन्देह नहीं कि, "वाणिज्य-सर्वस्व" एक असाधारण विषयों का सङ्कलनात्मक ग्रन्थरत्न है। व्यवसायी सज्जनों को मैं साग्रह सूचित करता हूँ कि, वे इस ग्रन्थ का उपयोग कर, यथेष्ट लाभ उठावें।

श्री गोपालशास्त्री नेने
भूतपूर्व प्रोफेसर-गवर्नमेंट संस्कृत कालेज,
बनारस।

आधुनिक व्यापारक्रम के उपयुक्त, व्यापारी पदार्थों के भावी रुख को जानने की जो प्रक्रिया "वाणिज्यसर्वस्व" में वर्णित है, वह लेखक के दीर्घकालिक अथक परिश्रम की व्यञ्जक है। ग्रहों के शरपरिवर्तन, क्रान्त्यंशसाम्य तथा अंशान्तरात्मक दृष्टियों के द्वारा तेजीमंदी का समय जानने के लिये जो उदाहरण दिये गये हैं, उनसे ग्रन्थ की उपादेयता और भी बढ़ गई है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि, यह पुस्तक एक उत्तम पथप्रदर्शक का काम करेगी।

पञ्चाङ्गविभागाध्यक्ष
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

श्री विन्ध्येश्वरी प्रसाद पाण्डेय,
ज्यौतिषाचार्य-ज्यौतिषतीर्थ।

श्रीमान् पण्डित मोतीलालजी नागर-प्रणीत "वाणिज्य-सर्वस्व" के प्रथम खण्ड को आद्योपान्त पढ़ कर मुझे अपार हर्ष हुआ। इस अनुपम ग्रन्थ में पण्डितजीने प्राचीन तथा नवीन ज्योतिष-ज्ञान का जो समन्वय कर दिखाया है, वह अत्यन्त श्लाघनीय है। शास्त्रादेश है कि--"योगे दृष्टिफलं योज्यं दृष्टौ योगफलं तथा"--केवल दृष्टि के आधार पर भी सम्पूर्ण शुभाशुभ फल कहे जा सकते हैं। इसी आधार-सूत्र को लेकर प्रस्तुत पुस्तक में पूज्य पण्डितजी ने ग्रहों की राशि, क्रान्ति एवं शर; इन तीनों गतियों की जो परिणामगति निकलती है, उसी वास्तव-फलद गति के आधार पर ग्रहों में समय समय पर जो जो दृष्टिसम्बन्ध हुआ करते हैं, उनका सहारा लेकर, व्यापारी वस्तुओं की तेजी मन्दी जानने का शास्त्रीय प्रकार अत्यन्त गम्भीर गवेषणा के साथ लिखा है। उदाहरण देकर ग्रन्थ को उपादेय ही नहीं बनाया; किंतु एक भारी आवश्यकता की सुन्दर पूर्ति भी की है, जिससे व्यापारी जगत् का महान् कल्याण होगा। आशा है, अगले खण्डों में इस विषय की और भी अमोघ सामग्री देखने को मिलेगी।

एस्ट्रो मेडिकल हाल
रामापुरा बनारस।

डाक्टर राय राखालदास
एम्, बी, बी, एस्,
विद्यावाचस्पति।

श्री नागरजी के "वाणिज्यसर्वस्व" को मैंने देखा है। पश्चिम देश की सायनगणना के आधार पर आपने यह अनुभव किया है कि, तेजी-मंदी की गणना ठिकाने से बैठती है। अब इस पुस्तक के आधार से और लोग भी इस गणना की सत्यता का अनुभव करें। मेरे विचार से तो प्राचीनगणना मेषादिगणना निरयनगणना ही है और उसी के अनुसार ऋषिमुनियों के वाक्य यथार्थ फलद होते हैं। पश्चिम की गणना के अनुसार पश्चिम के लोगों का फलादेश ठीक होना उचित ही है। इस पुस्तक में यद्यपि विचार अपने पूर्वाचार्यों के ही हैं, तथापि पश्चिम के विद्वानों के विचार का पूरा सहारा लिया गया है। अब इस पुस्तक के पाठक तथा इस पुस्तक के अनुसार कार्य करनेवाले अपने अनुभव को देखें। श्रीनागरजी का श्रम और विद्याप्रेम सराहनीय है।

सरस्वतीभवन
गवर्नमेंट संस्कृत कालेज, बनारस।

श्रीबलदेवमिश्र,
ज्यौतिषाचार्य।

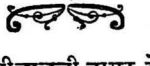

पण्डितप्रवर पण्डया मोतीलालजी नागर के द्वारा निर्मित "वाणिज्य-सर्वस्व" ग्रन्थ के प्रथम खण्ड का अवलोकन कर मैं बड़ा ही आनन्द-युक्त हुआ। ग्रन्थकर्ता की कल्पना बड़ी ही अद्भुत है। इसमें हर्शल, नेपच्यून आदि नवीन ग्रहों और सूर्यादि प्राचीन ग्रहों की अंशात्मक दृष्टियों तथा याम्योत्तर-शरपरिवर्तनों के द्वारा समर्घ-महार्घ का जो विचार किया गया है, वह सराहनीय है। मैं आशा रखता हूं कि, पण्डितजी एतद्विषयक और भी अधिकाधिक युक्तिपूर्ण ग्रन्थों का निर्माण

करेंगे, जिनसे लोक का बड़ा ही उपकार होगा। अन्त मे मैं यह हृदय से चाहता हूँ कि, इस पुस्तक का प्रचार उत्तरोत्तर प्रचुरमात्रा में हो।

पण्डित श्रीअवधबिहारी त्रिपाठी,

ज्यौतिषाचार्य, साहित्याचार्य,

प्रोफेसर—गवर्नमेन्ट संस्कृत कालेज, बनारस।

मुझे यह लिखते हुए महान् हर्ष हो रहा है कि, मेरे अभिन्नहृदय, संस्कृत तथा हिन्दी भाषा के प्रकाण्ड विद्वान् अर्घकाण्ड–वाचस्पति श्रीयुक्त पण्डया मोतीलालजी नागर ने वर्षों निरन्तर अनेक ग्रन्थों की छानबीन और बाजार से मिलान करके अनुभवसिद्ध, शास्त्रीय रहस्यसूचक नियम-सूत्रों का ही सहारा लेकर, एक सरलपद्धति के रूप में "वाणिज्यसर्वस्व" नामक ग्रन्थ का निर्माण करके सामयिक आवश्यकता की उत्तम पूर्ति की है। इस अनुपम ग्रन्थ में ऐसे अनेक गूढ़ विषयों का समावेश है, जिनको बतलाने के लिये कोई भी व्यक्ति आसानी से तैयार नहीं होता। नागरजी ने इस ग्रन्थ के प्रथम खण्ड को–जिसमें रूई के बाजार की तेजी–मंदी जानने की सोदाहरण शास्त्रीय सरल पद्धति है–प्रकाशित करके व्यापारी जनता को निःसन्देह सिद्धिप्रद मार्ग का अलभ्य दर्शन कराया है। मेरा विश्वास है कि, इस ग्रन्थ के द्वारा विद्वत्समाज तथा व्यापारीवर्ग अवश्य लाभान्वित होगा।

५४।८ गोविंदपुरा खुर्द
बनारस सिटी

माधवप्रसाद सिंहल

प्रस्तावना

—*—

प्रकृतिवादी प्रकृति को तो कर्मवादी कर्म को ही संसार में दृष्टिगोचर होनेवाले नित्य नये नये परिवर्तनों का प्रधान कारण बतलाते हैं। किन्तु हमारे ज्योतिश्शास्त्रप्रवर्तक त्रिकालदर्शी महर्षिगण इन समस्त परिवर्तनों का मूल कारण ग्रहों और राशियों को ही मानते हैं। उनकी दिव्यदृष्टि में विश्व का ऐसा एक भी पदार्थ नहीं, जिसपर इन ग्रहों और राशियों की सत्ता न हो। प्राचीन संहिता आदि आर्ष ग्रन्थों में जिसप्रकार हमारे परम-कृपालु महर्षियों तथा उनके अनुयायी पूर्वाचार्यों ने देश, राष्ट्र, मनुष्य, पशु, पक्षी, कीट, पतंग आदि स्थावर-जंगम पदार्थों के भविष्य-ज्ञान का मार्ग विशदरूप से समझाया है, उसीप्रकार सांसारिक जीवन-निर्वाह के मुख्य साधनरूप वाणिज्य-व्यापार के विषय में भी अनेकों प्रकारों का उल्लेख करके अपने मन्तव्यों को प्रत्यक्ष सिद्ध कर दिखाया है। परन्तु यह कहना कुछ भी अत्युक्त न होगा कि, चिरकाल से-कई शताब्दियों से भारतवर्ष में ऋषिप्रणीत रहस्य-सूचक ग्रन्थों के विलुप्त हो जाने और गुरु-परम्परा से उनके अध्ययन-अध्यापन की प्रणाली के उठ जाने से आज भारतवासियों की ऐसी शोचनीय स्थिति हो गई है कि, भारत की तत्काल चमत्कार दिखानेवाली विद्याओं में से 'ब्रह्मविद्या'

ब्राह्मणों से, 'युद्धविद्या' क्षत्रियों से और 'वाणिज्यविद्या' वैश्यों से कोसों दूर हट गई है। हां, इधर कुछ समय से भारतवर्ष में नये ढंग से व्यापार-कार्यों का संचालन होते देख, व्यापारी वस्तुओं की तेजी-मंदीसम्बन्धी भविष्यज्ञान की आवश्यकता प्रतीत होने पर भारतीय विद्वानों ने इस विषय के कुछ ग्रन्थ खोज कर प्रकाशित अवश्य किये हैं, परन्तु उनसे न तो विद्वत्समाज को ही पूर्ण संतोष होता है और न व्यापारीवर्ग को ही। यह एक भारी अवांछनीय त्रुटि है।

लगभग ४० वर्ष की बात है, जब मैं अपने जन्मस्थान हाथरस नगर में—जो भारत की प्रधान व्यापारी मंडियों में गिना जाता था—अपने पैतृक (यजमानी के) कार्यों में व्यस्त रहते हुए भी कतिपय स्थानीय प्रसिद्ध व्यापारियों की समय-समय पर की हुई व्यापारी वस्तुओं की भावीरुखसम्बन्धी जिज्ञासाओं पर शास्त्रानुसारी निर्णय उन लोगों को बतलाता तो वह कभी तो एकदम पूर्ण सफल होता और कभी सर्वथा विपरीत ही घटित हो जाता था। जिससे ऐसी आत्मग्लानि होती कि, अपनी पूर्वजोपार्जित मान-प्रतिष्ठा की रक्षा के लिये इस विषय से मैं कईबार विमुख हो बैठता। परन्तु मेरी अन्तरात्मा ने किसी तरह भी यह कभी स्वीकार नहीं किया कि, प्राचीन ग्रन्थकारों ने अर्घकाण्डसंबन्धी (तेजी-मंदी जानने के) प्रकरणों को लिखने में प्रतारणा की है। यही कारण था कि, मैं निरन्तर इस विषय की खोज में प्रयत्नशील रहा। संयोगवश संवत् १९८४ से अबतक लोकप्र-

सिद्ध, विद्या के प्रमुख केन्द्र-काशी के निवासकाल में मुझे भारतीय एवं पश्चिमीय अनेक नवीन ग्रन्थ भी देखने को मिले। तात्पर्य यह कि, वर्षों तक निरन्तर ऋषिप्रणीत एवं अन्यान्य पूर्वाचार्यों के ग्रन्थों में तथा पश्चिमीय अनेक प्रख्यात विद्वानों के निबन्धों में बतलाये हुए प्रकारों की गहरी छानबीन और बाजार से मिलान करने पर आज मैं इस निश्चय पर पहुँचा हूँ कि, निःसन्देह ग्रहों और राशियों के पारस्परिक दृष्टिसम्बन्धों के द्वारा प्रत्येक वस्तु की तेजी-मंदी के समय आदि का सहीसही पता लग जाता है और यह एक वैज्ञानिक तर्कसिद्ध उत्तम प्रकार है।

इतने दीर्घकाल के मेरे अनुसन्धानों के परिणामस्वरूप 'वाणिज्य-सर्वस्व' नामक बृहत ग्रन्थ का यह प्रथम खण्ड आप के सामने है। प्रस्तुत पुस्तक में—अद्भुत दैवी नियम, फलितविकास का मूल आधार, फलादेश के लिये पञ्चाङ्ग कैसा हो, ग्रह राशि एवं उनके दृष्टियोगों का पदार्थों पर प्रभाव, आधुनिक व्यापारक्रम, निर्णयकर्ता की योग्यता, फलादेश के रहस्यसूचक साधन, दृष्टि-परिचय, दृष्टियों के दीप्तांश, दृष्टि-दीप्तांश-बोधक चक्र, अंशान्तरात्मक दृष्टियोगों का सामान्य शुभाशुभत्व, जयपराजय का नियम, दृष्टियोगों के शुभाशुभत्व का कारणसहित विशदीकरण, निर्णयोपयोगी शुभाशुभ द्विर्द्वादश तथा षडष्टक, ग्रहों के विषय में शास्त्रीय मन्तव्य, दृष्टियोगों के प्रभावकाल का ज्ञान, शरत्परिवर्तन का बाजार पर सर्वोपरि प्रभाव, ध्यान में रखने के योग्य विशेष नियम, तेजी-मंदी जानने की सरल पद्धति, रूई का बाजार;

आदि स्तम्भों में प्रतिपाद्य (तेजी मंदी) विषय का यथाशक्य सशास्त्र एवं सयुक्तिक प्रतिपादन किया गया है। साथ ही न्यूयार्क के रूई के बाजार की दीर्घकालीन, स्वल्पकालीन एवं दैनिक तेजी-मंदी के द्योतक ग्रहों के पारस्परिक दृष्टियोगों का उदाहरणसहित विशेष विशदीकरण भी कर दिया है, जिससे निर्णयकर्ता को किसी भी वस्तु के फलाफल के विचार में सुगमता हो सके। इस ग्रन्थ के अन्य खण्डों में क्रमशः सोना, चांदी, अलसी, गेंहू, पाट आदि सभी व्यापारी वस्तुओं की तेजी-मंदी जानने का प्रकार लिखा गया है, जो शीघ्र ही प्रकाशित करके आपकी सेवा में समर्पित किया जायगा।

प्रस्तुत ग्रन्थ के निर्माण करने में काशीस्थ साङ्गवेदविद्यालय के प्रधान ज्यौतिषाध्यापक श्रीयुत पण्डित नीलकण्ठजी शास्त्री, स्थानीय पञ्चाङ्गकार ज्यौतिषाचार्य पण्डित शिवशङ्करजी पाण्डेय तथा पाश्चात्य ज्योतिर्विद्या के विशेषज्ञ वयोवृद्ध श्रीयुत बाबू माधव-प्रसादजी सिंहल द्वारा जो भारतीय एवं पश्चिमीय ग्रन्थों और अनेक जटिल विषयों के सम्बन्ध में समय समय पर सत्परामर्श और साहाय्य मिला है, उसके लिए उक्त विद्वानों का मैं हृदय से आभारी हूँ।

व्यापारी जनता तथा विद्वत्समाज को मेरे इस प्रयास से कुछ भी संतोष हुआ तो मैं अपने परिश्रम को सफल समझूँगा।

काशी।
२०-१२-१९५०

विनीत—
पण्ड्या मोतीलाल नागर

वाणिज्य-सर्वस्व

(प्रथम खण्ड)

अद्भुत दैवी नियम।

देश, काल तथा वस्तुमात्र के साथ ग्रहमण्डल और राशि-मण्डल का बहुत ही गहरा सम्बन्ध है, जिसके द्वारा भिन्नभिन्न देशों में, भिन्न भिन्न समयों में संसार के सभी जड़-चेतन पदार्थों की उत्पत्ति, स्थिति और लय होता रहता है। ग्रहों और राशियों की ईश्वरप्रदत्त अलौकिक शक्ति की ही यह महिमा है कि प्रतिक्षण सभी पदार्थों में परिवर्तन होता दीख पड़ता है। मेषादि द्वादश राशियाँ सबका आश्रयस्थान हैं—जगत् के सभी जड़चेतनात्मक पदार्थों का इन्हीं बारह राशियों में समावेश है। ग्रहमण्डल भी इन्हीं बारह राशियों में आश्रय पाता और अपनी अपनी गति के अनुसार भ्रमण करता हुआ अपने अपने अधिकार में आये हुए पदार्थों पर यथा समय न्यूनाधिक मात्रा में अच्छा या बुरा प्रभाव डालता रहता है, यह एक अद्भुत दैवी नियम है और अटल है।

फलित-विकास का मूल आधार।

ग्रह और राशि—इन दोनों शब्दों में ही उपर्युक्त विवेचन का बोधक अर्थ विद्यमान है। ग्रहों को इसलिये ग्रह कहा जाता है

कि, ये जगत् के सभी पदार्थों को ग्रहण कर लेते हैं—जकड़ लेते हैं अथवा अपने नियन्त्रण में रखते हैं। 'राशि' शब्द का अर्थ है समुदाय, संग्रह या इकट्ठा करना वा अपने में सभी पदार्थों का समावेश करना। ग्रह और राशि शब्द का यद्यपि यह सामान्य अर्थ है तथापि दोनों में अन्तर इतना है कि, ग्रह की सत्ता राशि के सहयोग से, कुछ नियत समय तक ही इन (ग्रह और राशि) के अधीन पदार्थों पर रहती है। परन्तु राशि की सत्ता ग्रह की सहयोगावस्था अथवा उसके दृष्टिकाल में तो ग्रहानुकूल उभयाधीन पदार्थों पर रहती है और ग्रह की अनुपस्थिति या दृष्टि के अभाव में केवल अपने अधीन पदार्थों पर ही रहती है। सारांश यह कि, ग्रहों और राशियों के पारस्परिक सम्बन्धों के आधार पर ही जगत् का सम्पूर्ण व्यवहार चलता है। इस विषय में सभी महर्षियों तथा पूर्वाचार्यों का एक ही मत है और फलितशास्त्र के विकास का भी यही एकमात्र मूलभूत आधार है।

फलादेश के लिये पञ्चाङ्ग कैसा हो ?

फलकथन के लिये—छोटे से छोटे और बड़े से बड़े काम के लिये—'पञ्चाङ्ग' ही सबसे उत्तम और मुख्य साधन है। पञ्चाङ्ग के निर्माण करने में इस समय दो पद्धतियां प्रचलित हैं। एक 'निरयन' और दूसरी 'सायन'। भारतवर्ष में प्रायः सर्वत्र निरयनपद्धति का ही प्रचार है और पाश्चात्य देशों में अबाधरूप से सायनपद्धति का। 'सायन' किंवा 'निरयन' किसी भी पद्धति से

पञ्चाङ्ग बनाया जाय, किन्तु उसका गणितविधान कैसा हो, इस विषय में ज्योतिश्शास्त्रप्रवर्तक महर्षियों तथा उच्चकोटि के अनुभवी विद्वानों का एकमुख यही कहना है कि—"वही गणित सच्चा और फल की सत्यता को प्रमाणित करनेवाला होता है, जिसका आकाशस्थ ग्रह, नक्षत्र आदि से ठीकठीक मिलान हो जाय और उसके आधार पर निश्चित किया हुआ फल का समय भी पल-विपल तक सही हो।" अतएव यह निर्विवाद है कि, फलादेश के लिये विविध यन्त्रों द्वारा सिद्ध स्पष्ट ग्रहगणित को ही काम में लाना चाहिये। यह काम उच्चकोटि की 'वेधशाला' के बिना हो नहीं सकता। भारतीय वेधशालाओं की अपेक्षा ग्रीन-विच की वेधशाला इस समय सर्वश्रेष्ठ समझी जाती है। उसके आधार पर सायनपद्धति से बनाये हुए पञ्चाङ्गों में 'राफाइल' के पञ्चाङ्ग को हम फलादेश के लिए अधिक उपयोगी समझते हैं। क्योंकि, उसमें ग्रहों का दैनिक स्पष्टीकरण, ग्रहों के राशिभोग, शरभोग तथा क्रान्तिभोग की गति एवं ग्रहों के शरपरिवर्तन आदि निर्णयोपयोगी साधनों के अतिरिक्त ग्रहोंका पारस्परिक दृष्टिसम्बन्ध (एस्पेक्ट्रेरियन) अलग से दिया रहता है, जिससे किस महिने की किस तारीख को किस समय किस ग्रह के साथ किस ग्रह का कैसा अंशान्तरात्मक दृष्टिसम्बन्ध हो रहा है; यह स्पष्टरूप से मालूम हो जाता है। निर्णयकर्ता को गणित के द्वारा प्रचलित दृष्टिसम्बन्धों के निर्माण करने की कोई विशेष आवश्यकता नहीं पड़ती। परन्तु जबतक वैसा निर्णयोपयोगी कोई भारतीय पञ्चाङ्ग

प्रकाशित न हो, तबतक राफाइल की 'एफीमरी' (अंग्रेजी पंचाङ्ग) को काम में लाने के लिये, हम अपने भारतवासी फलवक्ताओं से साग्रह अनुरोध करते हैं, जिससे उन्हें फलकथन में अधिकाधिक सफलता प्राप्त हो। जो लोग अंग्रेजी नहीं जानते, वे काशी के दिग्दिगन्तविख्यातकीर्ति महामहोपाध्याय श्रीयुत पण्डितप्रवर बापूदेवजी शास्त्री सी० आई० के पञ्चाङ्ग, या कलकत्ता की 'विशुद्ध-सिद्धान्तपञ्जिका' अथवा 'सन्देश' और 'जन्मभूमि' नाम के गुजराती पञ्चाङ्गों को काम में लावें। क्यों कि, व्यापारसम्बन्धी अत्यन्त सूक्ष्म और जिम्मेदारी के काम के लिये उक्त पञ्चाङ्गों का गणितविधान विशेष विश्वसनीय सिद्ध हो चुका है।

ग्रह, राशि एवं उनके दृष्टियोगोंका पदार्थों पर प्रभाव।

भारतीय ज्योतिश्शास्त्र में फलादेश के लिये मेषादि द्वादश राशियां तथा सूर्यादि नव ग्रहों का उपयोग किया है, किन्तु पश्चिमीय फलवक्ता ज्योतिषियों ने सूर्यादि नव ग्रहों के अतिरिक्त 'हर्शल' 'नेपच्यून' और 'प्लूटो' नाम के नवीन ग्रहों को भी—जो क्रम से कुम्भ, मीन तथा मेष राशि के स्वामी हैं—फल-दायी माना है।

किन किन देशों, प्रान्तों और स्थानों पर, वर्ष, अयन, ऋतु, मास, पक्ष, दिन, रात्रि, मुहूर्त, क्षण, निमेष आदि काल के अवयवों तथा धातु, मूल और जीवात्मक-क्रय-विक्रय के पदार्थों पर किन किन ग्रहों और राशियों का प्रभुत्व है, यह बात भारतीय

प्राचीन ज्योतिश्शास्त्र के संहिता आदि आर्ष ग्रन्थों में विस्तार से लिखी गई है। जिस समय कोई ग्रह किसी राशि, नक्षत्र वा नक्षत्रगत किसी चरण में प्रवेश करता है अथवा किसी दूसरे ग्रह से कुछ नियमित अंशों की दूरी पर रहकर संयोग, प्रतियोग आदि कोई अंशान्तरात्मक दृष्टिसम्बन्ध करता है, उस समय उस ग्रह का जगत् के किन किन पदार्थों पर कैसा और कितना प्रभाव पड़ता है, इत्यादि अनेक आवश्यक और ज्ञातव्य विषयों का सविस्तर वर्णन भी उन ग्रन्थों में पाया जाता है।

प्राचीन तथा नवीन, भारतीय एवं पाश्चात्य, विविध ग्रन्थों के सतत अनुशीलन एवं उनके बतलाये हुए विभिन्न प्रकारों से वर्षों निरन्तर परिश्रम करने पर आज हम आग्रहपूर्वक कह सकते हैं कि, यदि आप केवल ग्रहों और राशियों के पारस्परिक दृष्टिसम्बन्धों पर ही मनोयोगपूर्वक ध्यान देंगे, तो उसके द्वारा सोंना, चांदी, रूई, अलसी, गेंहू, पाट आदि सभी व्यापारी वस्तुओं की तेजी मंदी का सही सही अनुमान लगा सकेंगे और स्वयं लाभ उठाते हुए व्यापारीवर्ग को भी लाभ पहुँचा सकेंगे। साथ ही ऐसी परमोत्तम अमोघ विद्या को, जो कालचक्र की वक्रगति के कारण विलुप्तप्राय एवं जीर्ण-शीर्ण अवस्था को पहुँच गयी है पुनरुज्जीवित करने का श्रेय भी प्राप्त करेंगे।

आधुनिक व्यापारक्रम

जब कि इस परिवर्तनशील संसार की सभी बातों में बराबर परिवर्तन होता रहता है, तब व्यापार के क्रम का बदल जाना

भी कोई आश्चर्य की बात नहीं है। आज यह प्रत्यक्ष देखा जाता है कि, जिसकी दूकान में मुट्ठी भर भी अन्न नहीं, वह लाखों टन गेहूँ बाजार मे खरीद और बेच सकता है। दिनभर में कोई लक्षाधिपति बन बैठता है तो कोई अपना सर्वस्व खो बैठता है! इसे ही आजकल के व्यापारी लोग 'सट्टा' कहते हैं। करोड़ों व्यक्ति इस प्रकार के व्यापार में व्यस्त हैं। बड़े बड़े नगरों में 'एसोसिएशन' 'चैम्बर' आदि प्रशस्त कही जानेवाली अनेक संस्थाऐं योग्य संचालकों द्वारा नियमितरूप से कार्य कर रही हैं। हजारों व्यापारी स्वयं अथवा उनके प्रतिनिधिगण, कमीशन एजेंट, ब्रोकर (दलाल) आदि वहां पर बराबर क्रय-विक्रय करते रहते हैं और उसके फलस्वरूप व्यापारी वस्तुओ का भाव भी घटता बढ़ता रहता है। इस विषय में सामान्यतया लोगों की धारणा है कि, बाजार में जब किसी चीज के खरीदनेवालों की संख्या बढ़ जाती है, तब उस वस्तु का मूल्य बढ़ जाता है और जब बेचनेवालों का जोर बढ़ जाता है, तब उस वस्तु का भाव गिर जाता है। परन्तु वास्तव में यह बात ऐसी नहीं है। क्योंकि, मनुष्यमात्र के सभी कार्य उसकी इच्छाशक्ति से हुआ करते हैं। प्रत्यक्ष देखा जाता है कि, मनुष्य जो कुछ मन से सोचता है, उसे वाणी से कहता और अन्य इन्द्रियों की सहायता से कर डालता है। किये हुए कर्म का फल ही सुख-दुःख अथवा हानि-लाभ है। इससे सिद्ध होता है कि, हानिलाभ को स्वयमेव पैदा करलेनेवाला मन इन्द्रिय सब मनुष्यों के पास है और उसके

द्वारा ही मनुष्यमात्र व्यापार करता और हानिलाभ उठाता है। किसी विचार का मन में उठना और तदनुसार कार्य करना भी ग्रहों को मनुष्यों के ऊपर सत्ता होने के कारण हुआ करता है। इतना ही नहीं, किन्तु ग्रहों का हमारे आत्मा, मन और हस्तपादादि कर्मेन्द्रियों तथा आंख-कान आदि ज्ञानेन्द्रियों के साथ अतिनिकट का सम्बन्ध है। ज्योतिश्शास्त्रप्रवर्तक ऋषियों ने बतलाया है कि जिसे लोग आत्मा कहते हैं, वह ज्योतिश्शास्त्र-संकेतित सूर्य हैं, जिसके द्वारा मनुष्यमात्र के पुण्यात्मा अथवा पापात्मा, सदाचारी वा दुराचारी होने का अनुसन्धान किया जा सकता है। मन को ज्योतिश्शास्त्र में चन्द्र शब्द से व्यवहृत किया है। चन्द्र के द्वारा मनुष्यों के मानसिक विचारों का पता लगाया जा सकता है। इसी प्रकार भौमादि ग्रहों का शरीरगत रक्त, मांस, मज्जा आदि पदार्थों पर प्रभुत्व बतलाया गया है। यह तो हुई हमारे शरीर की बात! किन्तु इन्हीं सूर्यादि ग्रहों का व्यापारसम्बन्धी पदार्थों पर भी स्वतन्त्र अधिकार है, जिससे व्यापारी वस्तुओं की घटाबढी के समय आदि का सही सही पता लगता है।

निर्णयकर्ता की योग्यता।

किसी भी वस्तु की तेजी-मंदी का ठीक ठीक पता लगाने के लिये, यह अत्यावश्यक है कि, निर्णयकर्ता ज्योतिश्शास्त्र का अच्छा जानकार हो, लग्नकुण्डली की विशेषताओं को समझता हो, ग्रहों और राशियों के स्वभाव-गुण आदि को खूब अच्छी-

तरह जानता हो, ग्रहगणित के द्वारा ग्रहों के पारस्परिक दृष्टि-सम्बन्धों को निर्माण करके उनके शुभाशुभत्व का यथार्थ विचार करने में कुशल हो और कौन सा ग्रह किस समय किस राशि में प्रवेश कर रहा है ? उसका किस वस्तु पर कैसा और कितना प्रभाव पड़ेगा ? कौनसा व्यापार किस तरह किया जाता है ? इत्यादि बातों को बिना किसी दूसरे व्यक्ति की सहायता के विचार करने में प्रवीण हो। यदि ऐसा नहीं है तो उसके लिये यही अच्छी सलाह है कि, वह सबसे पहिले ऊपर लिखे गये विषयों की जानकारी और पूरा अभ्यास करले, तब आगे लिखे हुए नियम-सूत्रों से काम ले।

फलादेश के रहस्यसूचक साधन।

यह तो पहिले कहा जा चुका है कि, ग्रहों और राशियों का परस्परसापेक्ष ऐसा सम्बन्ध है, जिससे संसार के सभी जड-चेतन पदार्थों में प्रतिक्षण बराबर परिवर्तन होता रहता है। केवल राशि में यह शक्ति नहीं है कि, वह कुछ भी फलाफल कर सके। इन दोनों के पारस्परिक सम्बन्धों के द्वारा किन किन पदार्थों पर कब कैसा और कितना प्रभाव पड़ता है इत्यादि बातों को पहिले से ही जान लेने के लिये त्रिकालज्ञ महर्षियों तथा उनके अनुयायी अन्यान्य पूर्वाचार्यों ने सामान्य एवं विशेष शास्त्र का निर्माण किया। किन्तु सामान्य और विशेष शास्त्र भी ग्रहों और राशियों

की तरह परस्परसापेक्ष हैं। दोनों में शरीर और प्राण जैसा अत्यन्त घनिष्ट सम्बन्ध है। सामान्य शास्त्र शरीर है तो विशेष शास्त्र प्राण है। जिस तरह प्राण सूक्ष्म और अत्यावश्यक होते हुए भी शरीर के सापेक्ष है, उसी तरह विशेषशास्त्र भी सामान्य शास्त्र के सापेक्ष है। इतनाही नहीं, किन्तु जिसतरह शरीर के न रहने पर प्राण की कोई भी क्रिया पूरी नहीं हो सकती, ठीक उसी-तरह सामान्यशास्त्र के बिना विशेष शास्त्र भी क्रियारहित हो जाता है। अत एव यह निर्विवाद सिद्ध है कि जितना सुन्दर और सूक्ष्म विवेचन विशेषशास्त्र के द्वारा किया जा सकता है, उतना सामान्यशास्त्र से नहीं किया जा सकता। फिर भी सामान्य-शास्त्रज्ञान का होना अत्यन्त अवश्यक है। सारांश यह कि, सामान्य एवं विशेष शास्त्र के समन्वय के द्वारा प्रत्येक पदार्थ से सम्बन्ध रखनेवाले ग्रहों कां शुभाशुभत्त्व और उन की सामान्य तथा विशेष (अंशान्तरात्मक) दृष्टियों के समन्वय से यदि उन पदार्थों के भावी शुभाशुभ फल का निर्णय किया जायगा, तो वह विशेष सफल एवं विश्वसनीय सिद्ध होगा।

किसी भी वस्तु की तेजी मंदी जानने के लिये जिस प्रकार राशिमण्डल के अंशान्तरात्मक दृष्टिस्थान साधनीभूत हैं, उसी प्रकार ग्रह भी मुख्य साधन हैं। क्योंकि, सभी ग्रह समय समय पर अपनी अपनी गति के अनुसार राशिमण्डल में अंशान्तर-वाले दृष्टियोगों के उत्पादक हैं। ग्रहों का वस्तु की राशि-लग्न से केन्द्र त्रिकोणादि भावों के स्वामी होने के कारण शुभाशुभत्व भी

बदलता रहता है। इस विषय में निर्णयकर्ता बुद्धिमानों को चाहिये कि, वे सामान्यशास्त्र में बतलाई हुई 'द्वादशभाव, राशि, राशिस्वामी, ग्रहों का स्पष्टीकरण, ग्रहों का शुभाशुभत्व, त्रिकोण केन्द्रादि संज्ञाऐं' सामान्यशास्त्र के द्वारा समझ लें। विशेषशास्त्र के अनुसार जानने योग्य विशेष संज्ञाऐं निम्नलिखित हैं।

वस्तु की राशि-लग्न से त्रिकोण (पञ्चम नवम स्थान) के स्वामी सभी ग्रह (भले ही वे सामान्यशास्त्र के द्वारा शुभ हों वा पाप हों) शुभफल करते हैं। जो पापग्रह तीसरे, छठे और ग्यारहवें स्थान के स्वामी हों, तो वे शुभफल नहीं देते। इन्हीं स्थानों के स्वामी शुभग्रह हों, तो वे अपने शुभस्वभाव का सामान्य शुभफल देते हैं। जो शुभग्रह केन्द्र अर्थात् चौथे, सातवें और दसवें स्थान के स्वामी हों, तो वे शुभफल नहीं देते। इन्हीं स्थानों के स्वामी पापग्रह हों, तो वे अशुभफल नहीं देते। पूर्वोक्त स्थानों में पांचवें से नवम, तीसरे से छठा, छठे से ग्यारहवां, चौथे से सातवां और सातवें से दसवां स्थान बलवान् है। त्रिकोणेश से त्रिषडायपति पापग्रह पापी हैं। त्रिषडायपति पापग्रह से केन्द्रेश शुभग्रह अधिक पापी हैं। केन्द्रेश शुभग्रह से त्रिषडायपति पापग्रह शुभ हैं। और त्रिषडायपति पापग्रह से त्रिकोणेश अधिक शुभ है।

वस्तु की राशि-लग्न से बारहवें और दूसरे स्थान के स्वामी जिस भाव में हों, उसके स्वामी हो कर जैसे शुभ वा अशुभ हो

सकते हों, वैसे होंगे। जिस भावेश के साथ हों, वह जैसे शुभ वा अशुभ हों, वैसे होते हैं। अथवा वे किसी दूसरे स्थान के स्वामी हों और उस कारण से जैसे शुभ वा अशुभ हों, वैसे ही होते हैं। ग्रह दो स्थानों के स्वामी होने से भिन्न भिन्न फल देने-वाले होते हैं, वैसे यह व्ययेश और द्वितीयेश नहीं होते। यदि यह व्ययेश और द्वितीयेश न तो किसी अन्य स्थान के स्वामी हों और न किसी ग्रह के साथ हों किन्तु बारहवें अथवा दूसरे स्थान में ही स्थित हों, तो न शुभ और न अशुभ केवल समफलदायक होते हैं।

भाग्यस्थान से व्ययस्थान (अष्टमस्थान) का स्वामी होने के कारण अष्टमेश अत्यन्त अशुभ होता है। सब व्ययस्थानों से भाग्य का व्ययस्थान मृत्युरूप है; इसलिये अत्यन्त अशुभ है। वह अष्टमेश ही यदि लग्न का भी स्वामी हो तो शुभफल से योग कराता है, पूर्ण शुभ नहीं होता। सारांश यह कि, अष्टमेश जैसे पापी को शुभ योग करानेवाला लग्नेश अत्यन्त शुभ है; यह भी स्पष्ट है।

केन्द्र के स्वामी होने से शुभग्रह गुरु और शुक्र अन्य शुभग्रहों की अपेक्षा अधिक पापी होते हैं और मारक भी होते हैं। केन्द्र के स्वामी गुरु-शुक्र मारकस्थान (द्वितीय वा सप्तम) में पड़े हों तो प्रबल मारक (अत्यन्त पापी) होते हैं। केन्द्रस्वामी गुरु-शुक्र से केन्द्रेश बुध कुछ न्यून पापी होता है। इसी तरह केन्द्रेश बुध से केन्द्रेश चन्द्रमा न्यून पापी होता है। और सूर्य चन्द्र को

अष्टमेश होने का भारी दोष नहीं होता, सामान्य दोष तो रहता ही है।

पापग्रह केन्द्रेश होता हुआ त्रिकोण का भी स्वामी हो तो शुभ फल देता है, केवल केन्द्रेश होनेसे शुभ फल नहीं देता। इससे स्पष्ट है कि, पापग्रह केन्द्रेश होकर त्रिषडाययति अथवा अष्टमेश भी हो तो पापी ही होता है।

राहु-केतु जिस भाव में स्थित हों अथवा जिस भावेश के साथ हों, बलवान् होने से उन उन फलों को मुख्यरूप से देते हैं।

केन्द्रेश और त्रिकोणेश का आपस में सम्बन्ध होना ही 'योग' है। इसी से वे दोनों योगकारक कहे जाते हैं। और वे शुभफल से जो अधिक योगफल है, उसे देते हैं। यदि वे दोनों केन्द्रेश-त्रिकोणेश को छोड़कर दूसरों से सम्बन्ध न करते हों, तो विशेष योगफल देते हैं। ग्रहों का आपस में जो सन्बन्ध होता है, वह चार प्रकार से होता है। १ दोनों एक स्थान में हों, २ दोनों परस्पर पूर्णदृष्टि से देखते हों, ३ दोनों एक दूसरे के स्थान में हों, ४ एक तो दूसरे के स्थान में हो और दूसरा उसे पूर्णदृष्टि से देखता हो। ग्रह जिस राशि का स्वामी होता है, वह राशि उसका स्थान कहा जाता है।

केन्द्रेश और त्रिकोणेश दोनों वा दोनों में से एक अपने दोष से युक्त हों, तो भी केवल सम्बन्ध से बलवान् होते हैं और योगकारक होते हैं। केन्द्रेश शुभग्रह हो ता स्वयंदोषी होताहै और नीचस्थ होना अस्त रहना इत्यादि भी स्वयंदोष हैं।

केन्द्रेश त्रिकोण में हो और त्रिकोणेश केन्द्र में हो, यह एक योग हुआ। पहिले योग से यह योग कुछ न्यून है। केन्द्रेश और त्रिकोणेश दोनों केन्द्र में हों अथवा त्रिकोण में हों; यह दूसरा योग हुआ। यह योग उससे भी न्यून है। केवल केन्द्रेश त्रिकोण में हो या केवल त्रिकोणेश केन्द्र में हो; यह तीसरा योग हुआ। यह योग सबसे न्यून है।

किसी त्रिकोणेश का दशमेश से सम्बन्ध हो अथवा किसी केन्द्रेश का नवमेश से सम्बन्ध हो तो उत्तम योग होता है। उच्च, स्वगृह, मूलत्रिकोण, स्ववर्ग; इनमें जो योगकारक हों, तो भी उत्तम योग होता है।

केन्द्र और त्रिकोण का स्वामी एक ही ग्रह हो, तो वही एक ग्रह केन्द्रेश होने से और त्रिकोणेश होने से भी योगकारक होता है। पहिले जो यह कहा गया है कि 'एक ही ग्रह दो स्थानों का स्वामी होने से दो प्रकार के फलों को देता है' परन्तु यहाँ वैसा नहीं है। यही दोनों स्थानों का स्वामी योगकारक होता हुआ यदि दूसरे त्रिकोणेश से भी सम्बन्ध करता हो तो फिर उससे उत्तम और क्या होगा ?

राहु-केतु यदि केन्द्र में हों और वे त्रिकोणेश से सम्बन्ध करते हों अथवा त्रिकोण में हों और वे केन्द्रेश से सम्बन्ध करते हो, तो भी योगकारक होते हैं। दोनों से सम्बन्ध करें तो फिर योगकारक होने में सन्देह ही क्या है ?

यदि त्रिकोणेश अष्टमेश भी हो अथवा जो केन्द्रेश अष्टमेश वा लाभेश भी हो, उनके सम्बन्धमात्र से योग नहीं होता—योगभंग हो जाता है। यदि अन्य त्रिकोणेश अथवा अन्य केन्द्रेश का भी सम्बन्ध हो तो अवश्य योग होगा।

लग्नेश और दशमेश दोनों लग्न में हों वा दशमस्थान में हों, तो यह दोनों राजयोग होते हैं। इसी तरह नवमेश और दशमेश नवम में हों वा दशम में हों, तो यह दोनों भी राजयोग होते हैं। इन चारों विशिष्ट राजयोगों में वस्तु के मूल्य में विशेष वृद्धि होती है।

दृष्टि-परिचय।

आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च।
हिरण्ययेन सविता रथेनादेवो याति भुवनानि पश्यन्॥

शुक्ल यजुर्वेद के इस मन्त्र में तत्वरूप से कहा गया है कि, "भगवान् सूर्यदेव भुवनों को देखते हुए भ्रमण करते हैं।" यहाँ पर सूर्य उपलक्षणमात्र है। अतएव सूर्य की तरह अन्य ग्रह भी भुवनों को देखते हुए नियमबद्ध भ्रमण करते रहते हैं। और भुवनशब्द भी राशिमण्डल के द्वादश भुवनों का द्योतक है, जो कि सूर्यादि ग्रहों के परिभ्रमण का मार्ग है। बस, इसी वेद-प्रतिपादित सूर्यादिग्रहों की भुवनों पर डाली हुई दृष्टि को हमारे ज्योतिश्शास्त्रप्रवर्तक महर्षियों तथा अन्यान्य पूर्वाचार्यों ने विशदरूप से समझाया है।

जातकशास्त्र के प्रणेता आचार्यों ने दृष्टि को एकपाद, द्विपाद, त्रिपाद तथा चतुष्पाद; इस प्रकार चार भागों में विभाजित किया और किसी भी राशि वा भाव में स्थित ग्रह को द्रष्टा तथा उस ग्रह से कुछ नियत दूरी पर स्थित राशि, भाव अथवा तद्गत ग्रह को दृश्य मानकर, ग्रहों के शुभाशुभ-स्वभावानुसार फलकथन की पद्धति निर्माण की। किन्तु महर्षि पराशर के अनुयायी विद्वानों ने पूर्वोक्त दृष्टि-विभाजन को सामान्य ठहराया। केवल सप्तमस्थान पर होनेवाली पूर्ण दृष्टि को ही स्वीकार किया। साथ ही जिन जिन स्थानों पर अन्य आचार्यों ने एक-पादादि दृष्टि का होना माना था, वहां वहाँ क्रम से शनि, गुरु और मङ्गल की पूर्णदृष्टि को ही माना और केन्द्र-त्रिकोण आदि भावों के स्वामी ग्रहों में शुभाशुभत्व स्थापित करके फलादेश का मार्ग प्रस्फुट किया, जो विशेष आदरणीय हुआ।

स्वरोदयशास्त्र में ग्रहों की पूर्वोक्त दृष्टियों के अतिरिक्त दक्षिण-दृष्टि, वामदृष्टि, सम्मुखदृष्टि, ऊर्ध्वदृष्टि, अधोदृष्टि, तिर्यग्-दृष्टि, और पार्श्वदृष्टि भी फलकथन के उपयुक्त मानी गई हैं।

ताजिकशास्त्र के निर्माताओं ने ग्रहों में शुभाशुभत्व को न मानकर विभिन्न प्रकार का दृष्टि-विभाजन किया और दृष्टियों में ही शुभाशुभ फल करने की शक्ति का स्वीकार किया। किन्तु ग्रहों के दीप्तांशों के अन्दर होनेवाली दृष्टियों का विशेष फल और द्रष्टा-दृश्य में दीप्तांशों के अनन्तर बारह अंशपर्यन्त अन्तर रहने तक उन दृष्टियों का मध्यम फल माना। इस प्रकार दृष्टियों के

फल का अवधिकाल निश्चित किया, जिससे फलवक्ताओं को फलकथन में कुछ सुविधा हो गई। इसके अतिरिक्त जातकशास्त्र में जब कोई दो ग्रह एक राशि में स्थित होते हैं, तब दृष्टि का अभाव बतलाया है, वहाँ भी इन लोगों ने पूर्णदृष्टि को माना और उसे कुछ विद्वान् शुभ और कुछ अशुभ कहने लगे। इस मतभेद का कारण क्या है? यह उनके ग्रन्थों से सन्तोषप्रद सिद्ध नहीं होता। जो हो, किन्तु उन लोगों की ग्रहों के दीप्तांशानुसार दृष्टियों के शुभाशुभ फल की अवधि-कल्पना अवश्य कुछ सूक्ष्म और विशेष फलदायी प्रतीत होने से, ताजिकशास्त्र के मन्तव्यों का मान्य भी संसार ने किया।

ताजिकशास्त्रवालों की तरह पश्चिमीय विद्वानों ने कुछ अन्य दृष्टियां भी फलादेश के लिये निर्माण कीं और उन दृष्टियों में ही शुभाशुभत्व की कल्पना की। साथ ही फलकाल की अवधि जानने के लिये, ग्रहों और उन दृष्टियों के दीप्तांश भी स्थिर किये, जिन से फलवक्ता विद्वानों को फलकथन में विशेष सफलता मिलने लगी। इतना ही नहीं, किन्तु पाश्चात्य पञ्चाङ्गकारों ने एस्पेक्टेरियन (दृष्टियोग) शीर्षक देकर, प्रतिदिन होनेवाली ग्रहों की अंशान्तरात्मक दृष्टियों का समय आदि निश्चित करके फलवक्ताओं का बहुत बड़ा उपकार किया। इधर कुछ समय से भारतवर्ष में भी गुजरात, महाराष्ट्र, बंगाल तथा उत्तरप्रदेश के बम्बई, अहमदाबाद, पूना, कलकत्ता, उज्जैन आदि नगरों

से प्रकाशित होनेवाले पञ्चाङ्गो में भी उक्त दृष्टियोगों का उल्लेख होने लगा है; यह हर्ष का विषय है।

इस में सन्देह नहीं कि, यह अंशान्तरवाले दृष्टियोग सूक्ष्मातिसूक्ष्म फल के द्योतक हैं, जिन की संख्या अबतक १२ या १५ के लगभग पहुंच चुकी है। इन दृष्टियोगों के आधार पर किये गये निर्णय अधिकांश सफल होते हैं। हाँ, कभी कभी ऐसी परिस्थिति भी देखी गई है कि, इन दृष्टियोगों के विपरीत ही फल घटित हो जाया करता है। अतएव यह प्रश्न स्वयमेव उठता है कि, अबतक व्यवहार में लाये जानेवाले इन स्वल्पसंख्यक दृष्टियोगों के अतिरिक्त कुछ और भी ऐसे दृष्टियोग हैं जिन का पता न होने से निर्णय में भूलें हुआ करती हैं और कुछ का कुछ फल हो जाता है। एतदर्थ यदि भचक्र (राशिमण्डल) का कोई सयुक्तिक अंशान्तरात्मक विभाजन कर लिया जाय, तो यह समस्या सरलता से हल हो सकती है।

हमारी समझ से पूर्वाचार्यों ने जैसे एकराशि में ही अंशात्मक विभाजन करके सप्तवर्गी, दशवर्गी द्वादशवर्गी, षोडशवर्गी आदि की व्यवस्था की और उनके द्वारा सूक्ष्मातिसूक्ष्म फलकथन की युक्तियां निकाली हैं, वैसे ही भचक्र को पूर्ण (एक) मान कर उसके द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ आदि विभाग कर लिये जांव, तो वर्तमान में प्रचलित दृष्टियोगों की अपेक्षा कुछ अधिक संख्या में अंशान्तरवाले दृष्टियोग हो सकते हैं, जिनसे फलकथन में

और भी अधिक सफलता मिल सकती है। तदनुसार भचक्र का सयुक्तिक अंशान्तरात्मक विभाजन निम्नलिखित है।

संख्या	विभाग	अंशांतर	संख्या	विभाग	अंशांतर
१	पूर्ण वा एक	०	२०	षष्ठ्यंश	६
२	द्वितीयांश	१८०	२१	षष्ठ्यंशरहित	१७४
३	तृतीयांश	१२०	२२	अष्टाचत्वारिंशांश-	
४	चतुर्थांश	९०		रहित	१७२'।३०'
५	पञ्चमांश	७२	२३	चत्वारिंशांशरहित	१७१
६	षष्ठांश	६०	२४	द्वात्रिंशांशरहित-	
७	सप्तमांश	५१°।२६'			१६८'।४५'
८	अष्टमांश	४५	२५	चतुर्विंशांशरहित	१६५
९	नवमांश	४०	२६	विंशांशरहित	१६२
१०	दशमांश	३६	२७	अष्टादशांशरहित	१६०
११	एकादशांश	३२'।४४'	२८	षोडशांशरहित	१५७'।३०'
१२	द्वादशांश	३०	२९	द्वादशांशरहित	१५०
१३	षोडशांश	२२'।३०'	३०	एकादशांशरहित	
१४	अष्टादशांश	२०			१४७'।१६'
१५	विंशांश	१८	३१	दशमांशरहित	१४४
१६	चतुर्विंशांश	१५	३२	नवमांशरहित	१४०
१७	द्वात्रिंशांश	११'।१५'	३३	अष्टमांशरहित	१३५
१८	चत्वारिंशांश	९	३४	सप्तमांशरहित	१२८'।३४
१९	अष्टाचत्वारिंशांश	७'।३०'	३५	पञ्चमांशरहित	१०८

इन के अतिरिक्त षष्ठांश, चतुर्थांश, तृतीयांश तथा द्वितीयांश से रहित दृष्टियां क्रम से १२०, ९०, ६० और ० शून्य अंशान्तरवाली ही होती हैं, जो गणना में आ चुकी हैं।

भचक्र की पूर्वोक्त अंशान्तरात्मक दृष्टियों के अतिरिक्त दृश्य चक्रार्ध में ग्रहों का पांचबार नवांशयुतिनामक दृष्टियोग भी हुआ करता है। पहिली नवांशयुति तब होती है, जब कि राशिमण्डल की किसी एक ही राशि में दो ग्रहों का अन्तर शून्य होता है। दूसरी नवांशयुति ४० अंश के अन्तर पर, तीसरी नवांशयुति ८० अंश के अन्तर पर, चौथी नवांशयुति १२० अंश के अन्तर पर और पाँचवीं नवांशयुति १६० अंश के अन्तर पर हुआ करती है।

उपरिनिर्दिष्ट राशिमण्डलसम्बन्धी अंशान्तरवाले दृष्टियोगों के अतिरिक्त एक और दृष्टियोग होता है, जिसे 'क्रान्त्यंशसाम्य' कहते हैं। यह दृष्टियोग तब होता है, जब किन्हीं दो ग्रहों की क्रान्ति के अंशों में समानता होती है, भले ही वे दोनों ग्रह किसी एक (उत्तर वा दक्षिण) अथवा भिन्न भिन्न क्रान्ति में क्यों न हों?

इस दृष्टियोगों के जानने की सरल युक्ति यह है कि, भचक्र की बारह राशियों के (प्रत्येक राशि के तीस अंश के हिसाब से) कुल ३६० अंश होते हैं। किसी भी इष्टकाल पर प्रत्येक ग्रह और भाव के स्पष्ट राशि, अंश, कला और विकला तैयार हो जाने पर यह सहज ही जाना जा सकता है कि, किन्हीं दो ग्रहों

या भावों के बीच कितना अन्तर है? वह अन्तर अधिक से अधिक १८० अंशों तक हुआ करता है-शून्य अंश से क्रमशः बढ़ता हुआ १८० अंशों तक पहुँचता है। बाद में उसी क्रम से घटता घटता फिर शून्य अंश तक का ही अन्तर रह जाता है। जहाँ ३६० अंश की पूर्ति होती है, वहाँ शून्य ० लिखने की परिपाटी है। जब कभी किन्हीं दो ग्रहों में कितना अन्तर है? यह जानना अभीष्ट हो, तब अंशान्तर की गणना राशि या स्थान से न करके द्रष्टा और दृश्य ग्रहों के अंशों से ही करना चाहिये।

दृष्टियों के दीप्तांश।

भचक्र के सयुक्तिक विभाजन के द्वारा निर्माण की हुई सभी दृष्टियों का प्रभावकाल जानने के लिये, वाणिज्यकार्य के उपयुक्त निर्भ्रान्त दीप्तांशों का निश्चित कर लेना अत्यन्त आवश्यक प्रतीत होता है। क्यों कि, अबतक ग्रहों और दृष्टियों के दीप्तांशों की जो विभिन्न कल्पनाएँ दृष्टिगोचर हो रही हैं, वे भले ही राष्ट्र, देश वा किसी व्यक्तिविशेष के फलादेश के लिये उपयुक्त समझी जा रही हों, किन्तु वाणिज्यसम्बन्धी फलाफल का विचार करने में निर्णयकर्ताको उनके कारण कभी कभी महान् व्यामोह होता है-फल की अवधि यथार्थ नहीं मिलती। वे दीप्तांश बहुधा विफल हो जाते हैं।

वैसे तो फलादेश के ग्रन्थों में, सभी ग्रहों में अर्थलाभ कराने की सामर्थ्य का वर्णन पाया जाता है; किन्तु केवल बुध के फल-

कथन में ही यह स्पष्टरूप से लिखा मिलता है कि-"बुध वाणिज्य के द्वारा अर्थलाभ करानेवाला है।" दूसरी बात यह भी है कि, आजकल के व्यापार-क्रम को देखते हुए (जिस में वस्तु का लेन देन बहुत कम होता है और वायदे के सौदे करके, हानि-लाभ की रकम का ही बहुधा लेन देन होता है) बुध ही वाणी (वायदा) और लेख्य (कण्ट्राक्ट) का स्वामी ग्रह है; इस कारण भी जहां पर ग्रहों की पूर्णदृष्टि होती है, वहां पर व्यापारी वस्तुओं के फल-निर्णय के लिये बुध के जो ७ सात दीप्तांश बहुसम्मत हैं, वे ही मान लिये जांय, और अन्य दृष्टियोंमें त्रैराशिक की रीति से दीप्तांशों को स्थिर कर लिया जाय तो सभी शुभाशुभ फल करनेवाली दृष्टियों का निर्भ्रान्त (यथार्थ) प्रभावकाल मिल जायगा। इसी आधार पर-इन्हीं दीप्तांशों के द्वारा वर्षों निर्णय करने पर फलकाल की सत्यता प्रमाणित भी हो चुकी है। साथ ही यह भी देखा गया है कि दृष्टि-दीप्तांशों को दो भागों में विभक्त करने पर, कभी पहिले अर्धभाग के तुल्य अंशान्तर की अवधि में तो कभी बाद में और कभी आगे पीछे दोनों तरफ की अंशान्तरात्मक अवधि में ग्रहों का दृष्टिजन्य शुभाशुभ फल हुआ करता है। एतदर्थ प्रत्येक दृष्टि के दीप्तांश और उसके अर्धभाग का बोधक एक चक्र यहां पर दिया जाता है, जिससे प्रत्येक दृष्टि योग के प्रभावकाल की विभिन्नता स्पष्ट प्रतीत हो जायगी।

दृष्टि-दीप्तांश-बोधक चक्र।

संख्या	दृष्टिनाम	अंशान्तर	दीप्तांश	अर्धभाग
१	पूर्ण वा एक	०।०	७।०।०	३°।३०'।०"

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
Acc. No. 23743
Date 18.3.68
SIMLA

संख्या दृष्टिनाम	अंशान्तर	दीप्तांश	अर्धभाग
२ प्रतियोग वा पूर्ण	१८०°।०'	७°।०'।०"	३°।३०'।०"
३ त्रिकोण	१२०°।०'	४°।४०'।०"	२°।२०'।०"
४ केन्द्र	९०°।०'	३°।३०'।०"	१°।४५'।०"
५ पञ्चमांश	७२°।०'	२°।४८'।०"	१°।२४'।०"
६ षष्ठांश वा त्रिरेकादश	६०°।०'	२°।२०'।०"	१°।१०'।०"
७ सप्तमांश	५१°।२६'	२°।०'।०"	१°।०'।०"
८ अष्टमांश वा केन्द्रार्ध	४५°।०'	१°।४५'।०"	०°।५२'।३०"
९ नवमांश	४०°।०'	१°।३३'।२०"	०°।४६'।४०"
१० दशमांश	३६°।०'	१°।२४'।०"	०°।४२'।०"
११ एकादशांश	३२°।४४'	१°।१७'।०"	०°।३८'।३०"
१२ द्वादशांश	३०°।०'	१°।१०'।०"	०°।३५'।०"
१३ षोडशांश	२२°।३०'	०°।५२'।३०"	०°।२६'।१५"
१४ अष्टादशांश	२०°।०'	०°।४६'।४०"	०°।२३'।२०"
१५ विंशांश	१८°।०'	०°।४२'।०"	०°।२१'।०"
१६ चतुर्विंशांश	१५°।०'	०°।३५'।०"	०°।१७'।३०"
१७ द्वात्रिंशांश	११°।१५	०°।२६'।१५"	०।१३'।७"।३०"'
१८ चत्वारिंशांश	९°।०'	०°।२१'।०"	०°।१०'।३०"
१९ अष्टाचत्वारिंशांश	७°।३०'	०°।१७'।३०"	०°।८'।४५"
२० षष्ट्यंश	६°।०'	०।१४'।०"	०°।७'।०"
२१ षष्ट्यंशरहित	१७४°।०'	६°।४६'।०"	३°।२३'।०"
२२ अष्टाचत्वारिंशांशरहित	१७२°।३०'	६°।४२'।३०"	३°।२१'।१५"

संख्या दृष्टिनाम	अंशान्तर	दीप्तांश	अर्धभाग
२३ चत्वारिंशांशरहित	१७१°।०'	६°।३६'।०"	३°।१६'।३०"
२४ द्वात्रिंशांशरहित	१६८°।४५'	६°।३३'।४५"	३°।१६'।५२"।३०"'
२५ चतुर्विंशांशरहित	१६५°।०'	६°।२५'।०"	३°।१२'।३०"
२६ विंशांशरहित	१६२°।०'	६°।१८'।०"	३°।९'।०"
२७ अष्टादशांशरहित	१६०°।०'	६°।१३'।२०"	३°।६'।४०"
२८ षोडशांशरहित	१५७°।३०'	६°।७'।३०"	३°।३'।४५"
२९ द्वादशांशरहित	१५०°।०'	५°।५०'।०"	२°।२५'।०"
३० एकादशांशरहित	१४७°।१६'	५°।४३'।०"	२°।२१'।३०"
३१ दशमांशरहित	१४४°।०'	५°।३६'।०"	२°।१८'।०"
३२ नवमांशरहित	१४०°।०'	५°।२६'।४०'	२°।१३'।२०"
३३ अष्टमांशरहित	१३५°।०'	५°।१५'।०"	२°।७'।३०"
३४ सप्तमांशरहित	१२८°।३४'	५°।०'।०"।	२°।३'।०"
३५ पञ्चमांशरहित	१०८°।०'	४°।४२'।०"	२°।२१'।०"
३६ प्रथम–नवांशयुति	०°।०'	०°।७'।४६" ।४०"'	०°।३' ५३"।२०"'
३७ द्वितीय–नवांशयुति	४०°।०'	०°।७'।४६" ।४०"'	०°।३'।५३"।२०"'
३८ तृतीय–नवांशयुति	८०°।०'	०°।७'।४६" ।४०"'	०°।३'।५३"।२०"'
३९ चतुर्थ–नवांशयुति	१२०°।०	०°।७'।४६" ।४०"'	०°।३'।५३"।२०"'

संख्या	दृष्टिनाम	अंशान्तर	दीप्तांश	अर्धभाग
४०	पञ्चम-नवांशयुति	१६०°।०'	०°।७'।४६"।४०"'	०°।३'।५३"।२०"'

अब रही 'क्रान्त्यंशसाम्य' के दीप्तांश की बात। इस सम्बन्ध में पाश्चम देशवासी विद्वानों ने १ अंश का दीप्तांश माना है। यदि क्रान्तिका एक अंश लिया जाय तो क्रान्ति-गति के हिसाब से मन्दगतिवाले ग्रहों का यह दृष्टियोग महीनों और वर्षों तक अपना प्रभाव रखने के कारण व्यापारी वस्तुओं के फलादेश में अनुपयुक्त हो जाता है। क्योंकि, व्यापारकार्य में महिनों तो क्या कुछ दिनों तक भी वस्तुओं का एकतरफा भाव नहीं रहता—वह बराबर घटता बढ़ता रहता है। और यदि राशिमण्डलचारी मन्दगति ग्रहों का यह एक अंश लिया जाय, तब भी वह ग्रह अधिक समय तक अपना प्रभाव रख सकता है, इसलिये राशिभोग का एक अंश भी अनुपयोगी हो जाता है। यदि दोनों (क्रान्तिगति वा राशिभोग) में से किसी के एक अंशस्वरूप दीप्तांश को भी अन्य दृष्टियों के दीप्तांशों के अर्धभाग की तरह दो भागों में विभक्त कर लिया जाय, तो प्रभावकाल यद्यपि कुछ न्यून अवश्य हो सकता है, फिर भी वह अवधि भी बहुत लम्बी हो जाती है। इसलिये वस्तुस्थिति को देखते हुए यह उचित प्रतीत होता है कि, जिन दो ग्रहों में यह दृष्टिसम्बन्ध हो रहा हो, उनकी उस समय जो परमक्रान्ति हो, उसके अनुपात से जो कलात्मक प्रभावकाल

प्राप्त हो, उतनी ही राशिमण्डलचारी ग्रहों की यदि कलात्मक दैनिक गति हो तो गति-कलाओं के अर्धभाग में और यदि विकलात्मक दैनिक गति हो तो गति-विकलाओं के अर्धभाग में प्रभावकाल की सत्ता मानली जाय, तो बहुत कम अवधि होगी और वह वास्तव में अतीव उपयोगी होगी। जिस समय ग्रहों की परमक्रान्ति और भी कम होगी, उस समय इससे भी न्यून समय का प्रभावकाल होगा।

इस दृष्टियोग की यह भी एक विशेषता है कि, जिस समय जिन दो ग्रहों का यह दृष्टियोग होता है, उस समय उन दोनों ग्रहों का यदि कोई राशिमण्डलसम्बन्धी अंशान्तरवाला दृष्टियोग न होगा, तब युति का ही फल होता है। अन्यथा राशिचक्रमें होनेवाले अंशान्तरात्मक दृष्टियोग के फल को ही यह दृष्टियोग तीव्र (प्रबल) रूप दे देता है। किन्तु प्रभावकाल उस दृष्टियोग का न होकर 'क्रान्त्यंशसाम्य' का ही होगा। और फल भी दृष्टि करनेवाले दोनों ग्रहों में से जो ग्रह जय-पराजय के नियमानुसार विजयी होगा, उसी का होगा। जहाँ पर जय-पराजय का नियम लागू नहीं होगा, वहाँ पर दोनों ही ग्रह अपने अपने दीप्तांशों के अनुसार जितना प्रभावकाल प्राप्त होगा, उतनी अवधि में अपना-अपना फल आगे या पीछे अथवा साथसाथ करेंगे।

अंशान्तरात्मक दृष्टियोगों का सामान्य शुभाशुभत्व!

संख्या	दृष्टिनाम	अंशान्तर	शुभाशुभत्व	विशेष विवरण
१	संयोग वा युति	०°।०'	शुभाशुभ	ग्रहधर्मानुसार.
२	प्रतियोग	१८०°।०'	,,	,,
३	त्रिकोण	१२०°।०'	शुभ	
४	केन्द्र	९०°।०'	अशुभ	
५	पञ्चमांश	७२।०'	शुभाशुभ,	त्रिरेकादश वा केन्द्रानुसार
६	षष्ठांश	६०°।०'	शुभ	
७	सप्तमांश	५१°।२६'	शुभाशुभ,	द्विर्द्वादश वा त्रिरेकादशानुसार
८	अष्टमांश	४५°।०'	,,	,, ,,
९	नवमांश	४०°।०'	,,	,, ,,
१०	दशमांश	३६°।०'	,,	,, ,,
११	एकादशांश	३२°।४५'	,,	,, ,,
१२	द्वादशांश	३०°।०'	शुभाशुभ	द्विर्द्वादशानुसार
१३	षोडशांश	२२°।३०'	अशुभ	
१४	अष्टादशांश	२०°।०'	शुभ	
१५	विंशांश	१८°।०'	,,	
१६	चतुर्विंशांश	१५°।०'	,,	
१७	द्वात्रिंशांश	११°।१५'	अशुभ	

संख्या	दृष्टिनाम	अंशान्तर	शुभाशुभत्व	विशेष विवरण
१८	चत्वारिंशांश	६'।०'	शुभ	
१९	अष्टाचत्वारिंशांश	७'।३०'	,,	
२०	षष्ठ्यंश	६'।०'	,,	
२१	षष्ठ्यंशरहित	१४४'।०'	अशुभ	
२२	अष्टाचत्वारिंशांशरहित	१७२'।३०'	,,	
२३	चत्वारिंशांशरहित	१७१'।०'	,,	
२४	द्वात्रिंशांशरहित	१६८'।४५'	शुभ	
२५	चतुर्विंशांशरहित	१६५'।०'	अशुभ	
२६	विंशांशरहित	१६२'।०'	,,	
२७	अष्टादशांशरहित	१६०'।०'	,,	
२८	षोडशांशरहित	१५७'।३०'	,,	
२९	द्वादशांशरहित	१५०'।०'	शुभाशुभ	षडष्टकके अनुसार
३०	एकादशांशरहित	१४७'।१६'	,, ,,	,,
३१	दशमांशरहित	१४४'।०'	,, ,,	,,
३२	नवमांशरहित	१४०'।०'	,, ,,	,,
३३	अष्टमांशरहित	१३५'।०'	,,	त्रिकोण वा षडष्टक के अनुसार
३४	सप्तमांशरहित	१२८'।३४'	,, ,,	,,
३५	पञ्चमांशरहित	१०८'।०'	,,	केन्द्र वा त्रिकोण के अनुसार

संख्या	दृष्टिनाम	अंशान्तर	शुभाशुभत्व विशेष विवरण
३६	प्रथम नवांशयुति	०'।०'	शुभाशुभ, जय-पराजय के नियम, शुभाशुभ ग्रह वा दृष्टि के अनुसार
३७	द्वितीय नवांशयुति	४०'।०'	,, ,,
३८	तृतीय नवांशयुति	८०'।०'	,, ,,
३९	चतुर्थ नवांशयुति	१२०'।०'	,, ,,
४०	पञ्चम नवांशयुति	१६०'।०'	,, ,,

ऊपर लिखे हुए दृष्टियोगों का यह शुभाशुभत्व भी सामान्य है। क्योंकि, कभी कभी दृष्टिकर्ता ग्रहों के चतुर्विध सम्बन्ध वा राजयोगादि कारणों से उक्त दृष्टियों के शुभाशुभत्व में भी उलट-फेर हो जाता है। यही बात आगे के प्रकरण में विशेषरूप से से स्पष्ट कर दी गई है।

जय-पराजय का नियम।

राशियुति, नवांशयुति और क्रान्त्यंशसाम्य में जब भिन्नधर्मी ग्रह होते हैं, तब जय-पराजय का नियम लागू होता है। दो ग्रहों में से जो ग्रह उस समय उत्तर शर में होता है, वह विजयी और जो दक्षिण शर में होता है. वह पराजित माना जाता है। दोनों ही उत्तर शर में हों, तो जो अधिकांशी होगा, वह विजयी होगा। और जब दोनों ग्रह दक्षिण शर में हों, तब न्यून अंश-वाला ग्रह विजयी होगा।

दृष्टियोगों के शुभाशुभत्व का कारणसहित विशदीकरण ।

संयोग वा युति । अंशान्तर ०

यह दृष्टियोग तीन तरह से होता है । १ राशि-युति २ नवांश-युति और ३ क्रान्त्यंशों की समानता । ये तीनों ही समकोटि के दृष्टियोग हैं । किन्तु अपने अपने दीप्तांशों के अनुसार प्रत्येक का प्रभावकाल भिन्न भिन्न होता है । पूर्व-कथित ग्रहों के शुभाशुभत्व-बोधक प्रकरण के द्वारा निश्चित किये हुए किन्हीं दो शुभग्रहों की जब कोई युति होती है, तब सर्वदा शुभफल ही उस युति का हुआ करता है । जब एक शुभग्रह और दूसरा अशुभग्रह कोई युति करते हैं, तब उनमें से जो ग्रह जयपराजय के नियमानुसार विजयी होता है, उसी का शुभ वा अशुभफल हुआ करता है, पराजित ग्रह का नहीं । और जब दोनों अशुभग्रह किसी युति को करते हैं, तब सर्वदा अशुभ फल ही हुआ करता है । शुभफल से वस्तु के मूल्य में तेजी, और अशुभफल से मंदी समझना चाहिये ।

प्रतियोग (पूर्ण) दृष्टि । अंशान्तर १८०

इस दृष्टियोग के विषय में पश्चिमीय एवं भारतीय विद्वानों में मतभेद है । पश्चिमदेशवासी इस दृष्टियोग को अशुभ मानते हैं, किन्तु भारतीय विद्वानों का कहना है कि—जब किन्हीं दो शुभग्रहों में परस्पर यह पूर्ण दृष्टि होती है, तब विशेष शुभफल होता है । जब दृष्टि करने वाले ग्रहों में से एक शुभग्रह और दूसरा

अशुभग्रह हो और उनमें से अशुभग्रह दृश्य एवं शुभग्रह द्रष्टा हो, तब साधारण शुभफल होता है। इसके विपरीत यदि शुभग्रह दृश्य और अशुभग्रह द्रष्टा हो, तब साधारण अशुभफल हुआ करता है। और जिस समय दो अशुभग्रह परस्पर पूर्णदृष्टि करते हैं; उस समय इस दृष्टियोग का विशेष अशुभफल होता है।

यहां पर एक प्रश्न उठता है कि, जब दोनों ही ग्रह परस्पर द्रष्टा और दृश्य इस दृष्टियोग में होते हैं, तब कौनसा ग्रह द्रष्टा और कौनसा ग्रह दृश्य माना जायगा ? भारतीय विद्वानों ने यह समस्या बड़ी ही सरलता से इस प्रकार सुलझा दी है कि, ऐसी अवस्था में वस्तु की लग्न से छठे स्थानतक में रहनेवाला ग्रह दृश्य और सप्तम स्थान से बारहवें स्थानतक में रहनेवाला ग्रह द्रष्टा होता है और फल दृश्य ग्रह पर निर्भर है।

त्रिकोणदृष्टि। अंशान्तर १२०

शुभाशुभ दोनों प्रकार के ग्रहों का यह दृष्टियोग सर्वदा शुभफल करता है। किन्तु इष्टकाल पर यदि नवांशयुति हो रही हो, तो उसके अनुसार शुभ वा अशुभफल होता है। नवांशयुति के अभाव में त्रिकोणदृष्टि का ही फल हुआ करता है।

केन्द्रदृष्टि। अंशान्तर ९०

पश्चिमीय विद्वान् इस दृष्टियोग को अशुभ मानते हैं। किन्तु भारतीय विद्वान् ऐसा नहीं मानते। इनके मत में पूर्वोक्त ग्रह के शुभाशुभ प्रकरण के द्वारा किसी वस्तु के फलाफल-निर्णय

में यदि शनि और मङ्गल शुभग्रह सिद्ध हुए हों, और उन दोनों में मंगल से चतुर्थस्थान में ६० अंशों की दूरी पर शनि स्थित हो, तो ऐसी स्थिति में साधारणतः केन्द्रदृष्टि के होते हुए भी दृष्टिसम्बन्धी विशेष नियम से वह केन्द्रदृष्टि नहीं, प्रत्युत पूर्ण-दृष्टि ही मानी जाती है। अतएव ऐसी स्थिति के इस केन्द्रनामक दृष्टियोग का फल भी शुभ ही होता है। इसके विपरीत यदि शनि से मङ्गल चौथे स्थान में ६० अंशों की दूरी पर हो, तो अन्य ग्रहों की तरह केन्द्रदृष्टि का अशुभफल ही होता है।

पञ्चमांशदृष्टि। अंशान्तर ७२

स्थूलरूप से यह दृष्टियोग जब दो ग्रह एक दूसरे से तीसरे या ग्यारहवें स्थान में अथवा चौथे या दसवें स्थान में स्थित होते हैं, तब होता है। तीसरे या ग्यारहवें स्थान में स्थित ग्रहों का फल तो शुभ ही होता है, किन्तु चौथे या दसवें स्थान में स्थित ग्रहों के इस दृष्टियोग में यदि दृष्टिकर्ता दोनों ग्रह शुभ होते हैं, तब साधारण शुभफल अन्यथा साधारण अशुभफल होता है।

षष्ठांश वा त्रिरेकादश। अंशान्तर ६०

यों तो सभी ग्रहों का यह दृष्टियोग शुभफल करता है। किन्तु शनि का यह दृष्टिसम्बन्ध अधिक बलवान् होता है। क्योंकि, तीसरे स्थान पर शनि की विशेषरूप से पूर्णदृष्टि होती है। शनि

की इस दृष्टि का फल भी तभी ठीकठीक एवं विशेषमात्रा में होता है, जब कि शनि से तीसरे स्थान में बैठा हुआ ग्रह भी शनि के अंशों के तुल्यांश का होगा। जैसे-वृषराशि में जितने अंश का शनि हो और कर्कराशि में उतने ही अंशों का अन्य ग्रह। इसके विपरीत यदि मीनराशिस्थ ग्रह के साथ वृषराशिस्थ शनि का यह षष्ठांशनामक दृष्टियोग होगा तो बाजार पर साधारण प्रभाव पड़ेगा। किन्तु जिस वस्तु के निर्णयहेतु शनि शुभग्रह सिद्ध होगा, तब वह पूर्वोक्त दोनों स्थितियों में शुभफल ही करेगा। भले ही फल की मात्रा न्यून वा अधिक क्यों न हो? किन्तु यही शनि जिस वस्तु के लिये अशुभग्रह सिद्ध होगा, तो अपने से तीसरे स्थान में स्थितग्रह के साथ होनेवाले इस दृष्टि-योग में अशुभफल और अपने से ग्यारहवें स्थान में स्थित ग्रह के साथ इस दृष्टियोग में सामान्य शुभफल करता है।

सप्तमांशदृष्टि। अंशान्तर ५१ अंश २६ कला।

यह दृष्टियोग कभी तो दो ग्रह जब एक दूसरे से दूसरे और बारहवें स्थान में होते हैं, तब होता है। और कभी एक दूसरे से तीसरे और ग्यारहवें स्थान में स्थित होते हैं, तब होता है। जब द्वितीय और द्वादशस्थान में स्थित ग्रहों का यह दृष्टियोग होता है, तब वह 'द्विर्द्वादश' के नियमानुसार कभी शुभफल तो कभी अशुभफल करता है। और जब तीसरे और ग्यारहवें स्थान में स्थित ग्रहों का यह दृष्टियोग होता है, तब शुभफल ही करता

है। किन्तु शनि के साथ होनेवाले इस दृष्टियोग के शुभाशुभ फल का निर्णय षष्ठांशदृष्टि के निर्णयक्रम से करना चाहिये।

अष्टमांश वा केन्द्रार्धदृष्टि। अंशान्तर ४५

पश्चिमीय विद्वानों ने इस दृष्टियोग को केन्द्रार्ध होने से अशुभ माना है। परन्तु हमारी समझ से इस दृष्टियोग का निर्णय भी सप्तमांशदृष्टि की तरह करना चाहिये। क्योंकि, इस दृष्टियोग में भी दृष्टिकर्ता ग्रहों की वैसी ही स्थिति होती है।

नवमांश दृष्टि। अंशान्तर ४०

दशमांश दृष्टि। अंशान्तर ३६

एकादशांश दृष्टि। अंशान्तर ३२ अंश ४४ कला

इन तीनों दृष्टियोगों के शुभाशुभ फल का विचार भी सप्तमांशदृष्टि की तरह करना चाहिये। कारण, यहाँ भी ग्रहों की वैसी ही स्थिति होती है।

द्वादशांश दृष्टि। अंशान्तर ३०

इस दृष्टियोग के शुभाशुभ फल का निर्णय 'द्विर्द्वादश' नियम के अनुसार होता है।

षोडशांशदृष्टि। अंशान्तर २२ अंश ३० कला।

यह दृष्टियोग कभी तो एक ही स्थान में दोनों ग्रह होते हैं तब और कभी दोनों ग्रह एक दूसरे से द्वितीय और द्वादश स्थान

में होते हैं, तब होता है। एक स्थान में अशुभफल और विभिन्न स्थान में 'द्विर्द्वादश' के नियमानुसार शुभ वा अशुभ फल होता है।

अष्टादशांश दृष्टि। अंशान्तर २०

विंशांश दृष्टि। अंशान्तर १८

चतुर्विंशांश दृष्टि। अंशान्तर १५

द्वात्रिंशांश दृष्टि। अंशान्तर ११ अंश १५ कला।

चत्वारिंशांशदृष्टि। अंशान्तर ९

अष्टाचत्वारिंशांशदृष्टि। अंशान्तर ७ अंश ३० कला।

षष्ट्यंश दृष्टि। अंशान्तर ६

इन दृष्टियोगों में जब दोनों ग्रह एक स्थान में होते हैं, तब शुभ फल करते हैं। केवल द्वात्रिंशांश दृष्टि का ही अशुभ फल होता है। और जब दृष्टिकर्ता दोनों ग्रह एक दूसरे से द्वितीय और द्वादशस्थान में होते हैं, तब 'द्विर्द्वादश' के नियमानुसार शुभ वा अशुभ फल करते हैं।

षष्ट्यंशरहित दृष्टि। अंशान्तर १७४

अष्टाचत्वारिंशांशरहित दृष्टि। अंशान्तर १७२ अंश ३० कला

चत्वारिंशांशरहित दृष्टि। अंशान्तर १७१

यह तीनों दृष्टियोग जब एक ग्रह से दूसरा ग्रह सप्तम स्थान में होता है, और द्रष्टा-दृश्य दोनों ही शुभ ग्रह होते हैं, तब

तो शुभ फल अन्यथा अशुभ फल होता है। यदि सप्तम स्थान से भिन्न स्थान (छठे या आठवें स्थान) में एक से दूसरा ग्रह होता है, तब शुभाशुभ षडष्टक के अनुसार शुभ वा अशुभ फल होता है।

द्वात्रिंशांशरहितदृष्टि। अंशान्तर १६८ अंश ४५ कला

इस दृष्टियोग में जब एक ग्रह दूसरे से सप्तमस्थान में होता है, तब शुभ फल और भिन्नस्थान में षडष्टक के अनुसार शुभ वा अशुभ फल होता है।

चतुर्विंशांशरहितदृष्टि। अंशान्तर १६५
विंशांशरहितदृष्टि। अंशान्तर १६२
अष्टादशांशरहित दृष्टि। अंशान्तर १६०

इन तीनों दृष्टियोगों में जब एक ग्रह दूसरे से सप्तमस्थान में होता है, तब अशुभ फल और भिन्नस्थान में होता है, तब षडष्टक के नियमानुसार शुभ वा अशुभ फल होता है।

षोडशांशरहितदृष्टि। अंशान्तर १५७ अंश ३० कला

एक ग्रह से दूसरा ग्रह सप्तम स्थान में होता है. तब शुभफल और भिन्न स्थान में होता है, तब षडष्टक के नियमानुसार शुभ वा अशुभ फल होता है।

द्वादशांशरहितदृष्टि । अंशान्तर १५०

इस दृष्टियोग में षडष्टक के नियम से शुभ वा अशुभ फल हुआ करता है ।

एकादशांशरहितदृष्टि । अंशान्तर १४७ अंश १६ कला

दशमांशरहित दृष्टि । अंशान्तर १४४

नवमांशरहित दृष्टि । अंशातर १४०

अष्टमांशरहित दृष्टि । अंशान्तर १३५

सप्तमांश रहितदृष्टि । अंशान्तर १२८ अंश ३४ कला ।

यह पांचों दृष्टियोग जब षडष्टक में होते हैं, तब तो षडष्टक के नियमानुसार शुभ वा अशुभ फल होता है । परन्तु जब ये दृष्टियोग त्रिकोण में होते हैं, तब शुभ फल ही हुआ करता है ।

पञ्चमांशरहित दृष्टि । अंशान्तर १०८

यह दृष्टियोग जब केन्द्र में होता है, तब अशुभ फल और जब त्रिकोण में होता है, तब शुभ फल होता है ।

निर्णयोपयोगी शुभाशुभ द्विर्द्वादश तथा षडष्टक निम्न-लिखित हैं ।

शुभ द्विर्द्वादश

मीन	वृष	कर्क	सिंह	कन्या	वृश्चिक	मकर
मेष	मिथुन	सिंह	कन्या	तुला	धन	कुम्भ

अशुभ द्विर्द्वादश

मेष मिथुन तुला धन कुम्भ
वृष कर्क वृश्चिक मकर मीन

शुभ षडष्टक

मेष मिथुन सिंह तुला धन कुम्भ
वृश्चिक मकर मीन वृष कर्क कन्या

अशुभ षडष्टक

मेष मिथुन सिंह तुला धन कुम्भ
कन्या वृश्चिक मकर मीन वृष कर्क

यहांतक दृष्टियोगों के विषय में आवश्यक और ज्ञातव्य विषयों का जहांतक हो सका है, सविस्तर विशदीकरण किया गया है। इसके आगे ग्रहों के सम्बन्ध में भी शास्त्रीय विशेष मन्तव्यों का दिग्दर्शन किया जाता है।

ग्रह तीन प्रकार के होते हैं। १ बिम्बग्रह २ ताराग्रह और ३ तमोग्रह। जिनमें सूर्य तथा चन्द्र बिम्बग्रह, मङ्गल-बुध-गुरु-शुक्र और शनि; यह पांच ताराग्रह और राहु-केतु तमोग्रह कहे जाते हैं।

सूर्य के साथ एक राशि में या द्विर्द्वादश स्थान में जब कोई ग्रह गणितशास्त्र में बतलाये हुए कालांशों के अन्तर्गत होता है—सूर्यमण्डल में छिप जाता है, तब वह अस्त और सूर्य से पराजित माना जाता है। ऐसी दशा में सूर्य की ही प्रधानता रहती है।

किन्तु जब वह कालांशों से निकल जाता है—सूर्यमण्डल से पृथक् हो जाता है; तब वह ग्रह उदित समझा जाता है। फिर भी सूर्य के समीप रहने के कारण निस्तेजसा बलहीन होता है।

चन्द्र के साथ जब भौमादि ताराग्रहों की एकराशि में युति होती है, उसे 'समागम' कहते हैं। समागम में जो ग्रह उत्तर दिशा में होता है, वह विजयी और दक्षिण दिशा में रहनेवाला पराजित माना जाता है।

भौमादि पांच ताराग्रहों की जब एकराशि में युति होती है, तब उसे प्राचीन शास्त्रकारों ने 'ग्रह-युद्ध' बतलाया है। ग्रहयुद्ध भी चार प्रकार का है—१ भेद २ उल्लेख ३ अंशुमर्दन और ४ अपसव्य। यह विषय प्राचीन संहिता आदि आर्षग्रन्थों में विस्तार से लिखा गया है। ग्रहयुद्ध में भी उत्तर दिशा में रहनेवाला ग्रह विजयी और दक्षिण दिशा में रहनेवाला पराजित माना जाता है। किन्तु शुक्र को इन ताराग्रहों में सबसे अधिक तेजस्वी होने के कारण दक्षिण दिशा में रहते हुए भी भौमादि अन्य ताराग्रहों से विजय पा जानेवाला बतलाया है। समागम और ग्रहयुद्ध में उत्तर-दक्षिण दिशा का ज्ञान ग्रहों के उत्तर-दक्षिण शरों से होता है।

राहु-केतु के साथ युति होने पर उत्तर-शरवाला ग्रह बिजयी और दक्षिण-शरवाला पराजित होता है।

उपरिनिर्दिष्ट शास्त्रीय मन्तव्य के अतिरिक्त, जयपराजय के विचार में हमारा यह स्थूल अनुभव है कि, जब कभी कोई दो ग्रह भिन्न भिन्न स्वभाव के हों-एक शुभ और दूसरा अशुभ हो और वे किसी राशि या नवांश में युति करते हों अथवा उनके क्रान्त्यंशों की समानता होती हो, तभी जय-पराजय का निश्चय किया जाता है। और जब दोनों ग्रह समान प्रकृति के हों-शुभ हों अथवा अशुभ हों, तब जय-पराजय के विचार की इसलिये आवश्यकता नहीं पड़ती कि, वे दोनों ही शुभ वा अशुभ फल किया करते हैं। भले ही वे अपना फल आगे या पीछे क्यों न करें ?

भिन्न भिन्न क्रान्ति में भ्रमण करनेवाले दो ग्रहों में जब क्रान्त्यंशों की समानता होती है, तब उत्तर क्रान्तिवाला ग्रह विजयी और दक्षिण क्रान्तिवाला ग्रह पराजित माना जाता है। और जब एकही उत्तर वा दक्षिण क्रान्ति में दोनों ग्रहों के क्रान्त्यंशों की समानता होती है, तब जय-पराजय के नियमानुसार जो ग्रह विजयी होता है, उसी का फल होता है।

दृष्टियोगों के प्रभावकाल का ज्ञान।

पूर्वोक्त सभी दृष्टियोगों के उत्पादक ग्रहों में एक द्रष्टा और दूसरा दृश्य ग्रह होता है। राशिलग्नडल में जो ग्रह पिछली राशियों में होता है, वह द्रष्टा और अगली राशियों में जो ग्रह होता है, वह दृश्य कहलाता है। इन दृष्टियोगों का फल दृश्यग्रह की क्रान्ति-गति के

आधार पर दृष्टियोग होने से आगे या पीछे दृष्टिदीप्तांशों के अर्धभागतुल्य दोनों ग्रहों में अन्तर जिस समय तक होता है, उतनी अवधि में हुआ करता है।

दृश्यग्रह जब उत्तर क्रान्ति में हो और उसकी उत्तर क्रान्ति की गति बढ़ रही हो, तब वह उस दृष्टियोग के हो जाने के बाद, उस दृष्ट के दीप्तांशों के अर्धभाग के तुल्य अन्तर में जितना समय उसको अपनी गति के अनुसार लगता है, उतने समय तक वह अपना दृष्टिजन्य शुभ वा अशुभ फल करता है। और जब दृश्यग्रह की उत्तर क्रान्ति की गति घट रही हो, तब वह उस दृष्टियोग के होने से पहिले जितना समय प्राप्त हो, उतने समय में उस दृष्टि का शुभ वा अशुभ फल किया करता है।

दक्षिण क्रान्ति में दृश्यग्रह हो, तो उत्तर क्रान्ति की गति के नियम से विपरीत प्रभावकाल समझना चाहिये।

जिस समय दृश्यग्रह की उत्तर वा दक्षिण क्रान्ति की गति स्थिर हो—न तो बढ़ रही हो और न घट रही हो, तब वह दृश्यग्रह उस दृष्टि के दीप्तांशों के पूर्वापर दोनों हीं भागों के तुल्य अन्तर में जितना समय लगे, उतने समय तक दृष्टियोग होने से पहिले और बाद में भी अपना अच्छा या बुरा प्रभाव तो रखता है, पर बहुत कम।

ग्रहों के जब समानकोटि के कई दृष्टियोग हों, तब वस्तुराशि के स्वामी (लग्नेश) के साथ होने वाले दृष्टियोग की ही प्रधा-

नता रहती है। उसी दृष्टियोग का अपने प्रभावकाल के अनुसार फल हुआ करता है।

दो समान दृष्टियोगों में वक्रीग्रह के दृष्टियोग की अपेक्षा मार्गी ग्रह का दृष्टियोग बलवान् होता है।

किसी भी राशि में प्रवेश करके, कोई ग्रह जबतक एक अंश का नहीं होता, तब तक वह ग्रह निरंश माना जाता है। उसका कोई भी दृष्टियोग क्यों न हो? वह निष्फल होता है। अथवा विपरीत फल करता है—शुभ दृष्टियोग का तेजी के स्थान में मंदी और अशुभ दृष्टियोग का मंदी के बदले तेजी फल होता है।

अस्त, नीचस्थ तथा वक्रीग्रह के साथ होने वाले दृष्टियोग का फल भी विपरीतही होता है। शुभ दृष्टियोग का अशुभ और अशुभ दृष्टियोग का शुभ फल हुआ करता है।

एकराशिगत ग्रहों में होने वाले दृष्टियोग भी ध्यान में रखने के योग्य हैं। क्योंकि, जब भिन्नराशिस्थ ग्रहों के दृष्टियोगों का अभाव होता है, तब यही छोटे छोटे दृष्टियोग शुभाशुभ फल किया करते हैं।

कभी कभी सावकाश-निरवकाश नियम से भी दृष्टियोगों की प्रबलता, दुर्बलता अथवा बाध्य-बाधक सम्बन्ध के द्वारा मुख्यता निश्चित करके फल—निर्णय किया जाता है।

शर—परिवर्तन का बाजार पर सर्वोपरि प्रभाव।

जब कोई ग्रह उत्तर वा दक्षिण शर में प्रवेश करता है, तब

उसके शरपरिवर्तन-सम्बन्धी प्रभावकाल के अन्दर होनेवाले अंशान्तरात्मक अन्य दृष्टियोगों का कुछ भी महत्व नहीं रहता। उन दिनों शरपरिवर्तन की ही मुख्यता रहती है।

ग्रहों के परमशर का गणितागत मान कभी न्यून और कभी अधिक हुआ करता है। इस कारण हमारे पूर्वाचार्यों ने चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि के उत्तर-दक्षिण शरों का व्यवहारोपयोगी मध्यम मान स्थिर कर दिया है। वह निम्नलिखित है।

ग्रह	उत्तरशर का मध्यम मान	दक्षिणशर का मध्यम मान
चन्द्र	५ अंश १७ कला	५ अंश १२ कला
मङ्गल	६ अंश ३१ कला	६ अंश ४७ कला
बुध	७ अंश ० कला	७ अंश ० कला
गुरु	१ अंश ४० कला	१ अंश ३८ कला
शुक	८ अंश २ कला	८ अंश ५५ कला
शनि	२ अंश ५२ कला	२ अंश ५२ कला

हर्शल, नेपच्यून और प्लूटो नाम के नवीन ग्रहों के उत्तर-दक्षिण शरों का मध्यम मान भी क्रम से शनि, गुरु और मंगल के उत्तर-दक्षिण शरों के मध्यममान के समान ही समझना चाहिये। क्योंकि, यह उन्हीं की राशियों के स्वामी हैं।

किसी भी ग्रह के वर्तमान परमशर और मध्यम मान का अन्तर करने पर वर्तमान परमशर और अन्तर में जो न्यूनतम हो, उसे मध्यममान से गुणा करने पर, जो फल प्राप्त हो, उसको कला-

विकलात्मक मान कर, तदनुसार उस ग्रह के शर की दैनिक गति के द्वारा जितना समय उपलब्ध हो, उतने समय तक उस ग्रह के शरपरिवर्तन का प्रभाव रहता है।

शरपरिवर्तन के समय उस ग्रह की स्थानविशेष के साथ एक प्रकार की युति होती है, जो अन्य युतियों से प्रबल एवं निरवकाश होती है। क्योंकि, अन्य युतियों को तो फिर भी अपना फल करने के लिये अवकाश रहता है, किन्तु शरपरिवर्तन को दूसरा समय महिनों और कभी वर्षों तक नहीं मिलता।

बहुधा देखा गया है कि, जब कोई ग्रह उत्तरशर में प्रवेश करता है, तब मंदी और दक्षिणशर में प्रवेश करने पर तेजी करता है। उस समय वह ग्रह यदि वक्री अथवा अस्त-दोष से दूषित होगा, तो विपरीतफल करता है—मंदी की जगह तेजी और तेजी के स्थान में मंदी कर देता है।

ध्यान में रखने के योग्य विशेष नियम।

जिस राशि में जिस वस्तु का आश्रयस्थान हो, वह राशि और उसका स्वामी ग्रह; यह दोनों ही उस वस्तु की घटावढ़ी जानने के मुख्य साधन हैं। वस्तु की राशि को ही उसकी लग्न मानकर, लग्नादि द्वादश भावों के स्वामी ग्रहों का शुभाशुभत्व सामान्य एवं विशेष शास्त्र के नियमों के द्वारा निश्चित करके, लग्न तथा अन्यान्य शुभाशुभ ग्रहों के शुभाशुभ दृष्टिसन्बन्धों के आधार पर प्रत्येक वस्तु की तेजी-मंदी का ठीक ठीक पता लगता है।

समस्त दृष्टिसम्बन्धों का एक निश्चित स्थान होता है, जो ग्रहों की अंशात्मक दूरी पर माना गया है। मन्दगतिवाले ग्रहों के दृष्टियोगों के (दृष्टिसम्बन्धों के) आधार पर प्रत्येक वस्तु की दीर्घकालीन तेजी मंदी और शीघ्रगामी ग्रहों के दृष्टि सम्बन्धों के आधार पर स्वल्पकालीन तेजी मंदी का निरूपण किया जाता है।

ग्रहों के परस्पर जो जो दृष्टि-सम्बन्ध समय समय पर हुआ करते हैं, वे उन दिनों की प्रत्येक वस्तु की गति-विधि (बाजार का भावी रुख) किधर को जा रही है, उसकी पहिले से सूचना देते हैं।

जब ग्रहों के शुभ दृष्टिसम्बन्ध ही लगातार कुछ समय तक चलते रहते हैं, तब अधिक समय तक उसवस्तु के भावों में एकतरफा तेजी चलती है। इसी तरह कुछ समय तक एक के बाद दूसरा और दूसरे के बाद तीसरा, इस तरह लगातार अशुभ दृष्टिसम्बन्ध ही आते रहते हैं, तब बाजार में उस वस्तु के भावों में एकतरफा मंदी का ही साम्राज्य रहता है। और जब एकसाथ शुभाशुभ दोनों प्रकार के दृष्टिसम्बन्ध होते हैं, तब बाजार अनिश्चित रूप धारण कर लेता है-बाजार में क्षणक्षण में तेजी-मंदी के झोंके आते रहते हैं या एकदम सन्नाटा छाया रहता है। ऐसे अवसर पर बड़ी ही सतर्कता से काम लेना चाहिये।

ग्रहों और दृष्टियों के शुभाशुभत्व एवं उनके प्रभावकाल आदि के नियम-सूत्रों को अच्छी तरह ध्यान में रखकर अभ्यास करने

से थोड़े ही समय में प्रत्येक वस्तु का सही सही भविष्य निर्णय-कर्ता की आंखों के सामने नाचने लगेगा और वह अचूक चांसों का पूरा पूरा लाभ उठा सकेगा। साथ ही निर्णयकर्ता यदि ग्रहों के दृष्टिसम्बन्धों के द्वारा राष्ट्रीय भविष्य का ज्ञान भी प्राप्त कर लेगा, तो इसमें अणुमात्र भी सन्देह नहीं कि, वह तेजी-मंदी के उन बड़े बड़े झोकों का भी पता लगा सकेगा कि, जो युद्ध, महामारी अथवा हड़ताल आदि के कारण व्यापारी केन्द्रों में अकस्मात् उत्पन्न हो जाते हैं।

यहां तक वस्तुओं की तेजी-मंदी का समय आदि जानने के उपयुक्त आवश्यक साधनों और नियमसूत्रों का उल्लेख किया गया है। इसके आगे निर्णय करने की सरल पद्धति का दिग्दर्शन निर्णयकर्ता की सुविधा के लिये किया जाता है।

तेजी-मंदी जानने की सरल पद्धति।

निर्णयकर्ता को जिस वस्तु की जिस समय की तेजी-मंदी जानना अभीष्ट हो, पहिले उस वस्तु की राशि का निश्चय करे। फिर वस्तु की लग्न से द्वादशभावों के स्वामी ग्रहों का विशेष शास्त्र के अनुसार शुभाशुभत्व स्थिर करे। बाद में स्थानीय इष्टकाल पर सभी ग्रहों का सायनपद्धति से स्पष्ट करके वस्तु की लग्न-कुण्डली में यथास्थान स्थापित करे। साथ ही वे ग्रह जिन जिन नवांशों में हों, उन उन नवांशराशियों में एक नवांशकुण्डली पृथक् लिख कर, उसमें यथास्थान स्थापित करे। नवांशकुण्डली

की लग्न भी वही होती है, जो वस्तु की लग्न होती है। फिर यह देखना चाहिये कि, ऐसे कौनसे दृष्टियोग हैं, जिनका प्रभाव उन ग्रहों की उत्तर वा दक्षिण क्रान्ति की गति के बढ़ने या घटने के कारण दृष्टियोग हो जाने के बाद इष्टकाल पर भी विद्यमान है। इसी प्रकार विद्यमान प्रभाववाले और भावी दृष्टियोगों का भी निश्चय सावधानी से करना चाहिये। इसप्रकार निश्चित किये हुए अतीत, वर्तमान और भावी सभी दृष्टियोगों को क्रम से दोनों कुण्डलियों के नीचे कारणसहित शुभाशुभत्व एवं उनके प्रभावकाल आदि के निर्णय के साथ लिखे। साथ ही यह भी देखले कि, उस समय कोई शरपरिवर्तन आदि विशेष योग तो नहीं हो रहा है कि, जिसके कारण उक्त दृष्टियोगों का प्रभाव नष्ट हो जाता हो। बाद में दृष्टियोगों की प्रबलता वा न्यूनाधिकता के आधार पर उस समय की तेजी-मंदी का विवेचना-सहित सारांशरूप निचोड़ क्या होता है, यह स्पष्टरूप से लिखे। हमारा दृढ़ विश्वास है कि, इसप्रकार किया हुआ निर्णय यदि निर्णयकर्ता की कोई भूल न होगी, तो प्रतिशत सही होगा।

रूई का बाजार।

व्यापारियों से यह छिपा नहीं है कि, रूई के बाजार का मुख्य आधार इस समय अमेरिका के बाजार पर निर्भर है। अमेरिका में 'न्यूयार्क' और 'न्यू ओरलिन' यह दो नगर इस व्यापार के केन्द्र माने जाते हैं। अन्य सभी देशों के निवासी यहां के बाजार

की गतिविधि को देखते हुए ही अपने व्यापारकार्य का संचालन करते हैं।

ज्योतिषग्रन्थों की छानबीन करनेपर रूई के स्वामीग्रह और उस पर अपना आधिपत्य रखनेवाली राशि का स्पष्टरूप से उल्लेख नहीं मिलता। कहीं-कहीं आभासमात्र मिलता है कि "सफेद रंग के पदार्थों पर शुक्र और चन्द्र का स्वामित्व है।" इस आधार-सूत्र को लेकर एक भारी अड़चन आ पड़ती है कि इन दोनों में से किसको रूई का स्वामी माना जाय? हमारी समझ से इस प्रश्न का समाधान इस तरह सुगमता से हो जाता है कि, वजन में चन्द्रमा भारी और शुक्र हलका है; इसलिये सफेद रंग के जो पदार्थ वजन में भारी हैं, उनका स्वामी चन्द्रमा और जो पदार्थ वजन में हलके हैं, उनका स्वामी शुक्र है। जैसे–वजन में चांदी भारी है उसका स्वामी चन्द्र और रूई हलकी है, तो उसका स्वामी शुक्र। अब रही राशि की बात! इसके लिये, शुक्र की वृष-तुला राशियों में से तुलाराशि के मान लेने में कई कारण पाये जाते हैं। १ देववाणी–संस्कृतभाषा में रूई के अर्थ में 'तूल' शब्द का प्रयोग किया है। २ तूल या रूई दोनों की नामराशि भी तुला है और व्यापारकार्य में नामराशि की ही प्रधानता बतलाई गई है। ३ शुक्र की वृषराशि में रूई का वाचक कोई शब्द नहीं है; इस कारण भी रूई की तुलाराशि ही स्थिर होती है। अतएव न्यूयार्क टाइम के इष्टकाल पर तुलाराशि और शुक्र आदि ग्रहों के

पारस्परिक दृष्टिसम्बन्धों के द्वारा रूई की तेजी मंदी का निर्णय अभ्यासी के लिये अधिक उपयुक्त होगा।

एतदर्थ कुछ उदाहरण यहां दिये जाते हैं जिनके सहारे बुद्धिमान् निर्णयकर्ता चाहे जिस समय की रूई की तेजी-मंदी का निर्णय सरलता से कर सकेगा।

पूर्वोक्त नियमसूत्रों के आधार पर दीर्घकालीन एवं स्वल्पकालीन कुछ दृष्टियोगों का न्यूयार्क टाइम के अनुसार कारणसहित विशेष विवरण इस प्रकार है:—

तारीख १ जुलाई सन् १९५० शनिवार। फल=बाजार बंद

१—बुध का उत्तरशर-परिवर्तन। समय प्रातः ६ बजे।

बुध का वर्तमान परमशर १ अंश ४९ कला। बुध के उत्तर परमशर का मध्यममान ७ अंश ० कला। इन दोनों का अन्तर ५ अंश ११ कला है। अन्तर और वर्तमान परमशर में बुध का वर्तमान परमशर ही न्यून है। इसे मध्यममान से गुणा किया तो १२ कला और ४३ विकला, यह प्रभावकाल प्राप्त हुआ, जो बुध के वर्तमान परमशर की गति के हिसाब से ता० २ जुलाई रविवार को प्रातः ९'। १२'। २१" तक रहा। किन्तु ता० १ जुलाई शनिवार को न्यूयार्क का बाजार बन्द था; इसलिये बुध के उत्तरशरपरिवर्तन का फल-मंदी नहीं जानी जा सकी।

२—मङ्गल का दक्षिणशरपरिवर्तन। समय प्रातः ८ बजे।

मङ्गल का वर्तमान परमशर १ अंश १९ कला। मङ्गल के दक्षिण परमशर का मध्यममान ६ अंश ४७ कला। दोनों का

अन्तर ५ अंश २८ कला है। अन्तर और वर्तमान परमशर में मंगल का वर्तमान परमशर हो न्यून है। इसे मंगल के दक्षिणशर के मध्यममान से गुणा किया तो ८ कला और ५४ विकला प्रभावकाल प्राप्त हुआ। जो कि मंगल के वर्तमान परमशर की गति के हिसाब से ता० ८ शनिवार को १३'।२४' तक रहा। तात्पर्य यह कि; मंगल के दक्षिणशरपरिवर्तन की तेजी ता० १ जुलाई शनिवार से ता० ८ जुलाई शनिवार तक निश्चित हुई। तदनुसार न्यूयार्क का बाजार ता० १,२ और ४ जुलाई को बन्द रहा। शेष दिनों में बराबर तेजी रही।

ता ३ जुलाई १९५० सोमवार। फल १६ तेजी

१—शुक्र-गुरु का केन्द्रनामक दृष्टियोग।

अंशान्तर ९०। समय १२'।५'।

लग्नेश शुक्र की षष्ठेश गुरु के साथ होनेवाली यह केन्द्रदृष्टि अशुभ है। शुक्र शुभ ग्रह और गुरु अशुभ ग्रह है। गुरु द्रष्टा और शुक्र दृश्य ग्रह है। यद्यपि यह दृष्टियोग शुभाशुभ ग्रहों का हो रहा है, तथापि दृष्टि के अशुभ होने से मंदी का सूचक है। किन्तु यह दृष्टियोग गुरु के वक्री होने के कारण विपरीत फल—मंदी के स्थान में तेजी—करनेवाला है। दृश्य ग्रह शुक्र की उत्तर क्रान्ति की गति बढ़ रही है; इसलिये दृष्टियोग हो जाने के बाद, दृष्टि-दीप्तांश के अर्धभाग १ अंश ४५ कला के तुल्य अन्तर दोनों ग्रहों

में जितने समय तक रहेगा, उतने समय तक प्रभावकाल होगा। वह समय ता० ३ सोमवार को १२'।५' से ता० ४ मंगलवार को प्रातः ३'।५२' तक है। इसलिये ता० ३ सोमवार में ही इस दृष्टि-योग की तेजी निश्चित हुई और उस दिन तेजी ही रही।

२ शनि और नेपच्यून का द्वादशांश नामक दृष्टियोग।

अंशान्तर ३०। समय १३'।१७'।

केन्द्र-त्रिकोणाधिपति शनि की षष्ठेश नेपच्यून के साथ होनेवाली यह दृष्टि शुभ है। दोनों में द्विर्द्वादशस्थान-सम्बन्ध भी शुभ है। शनि द्रष्टा और नेपच्यून दृश्य ग्रह है। नेपच्यून की दक्षिण क्रान्ति की गति बढ़ रही है; इसलिये दृश्यग्रह नेपच्यून तथा द्रष्टाग्रह शनि में जितने समय तक दृष्टि-दीप्तांश के अर्धभाग ३'५ कला तुल्य अन्तर रहेगा, उतने समय तक प्रभावकाल होगा। वह समय ता. २५ जून सन् १९५० को प्रातः ७ बजे से ता. ३ जुलाई सोमवार को १२'।५' तक निर्णयक्रम से निश्चित होता है। अतएव इस छोटे से दृष्टियोग की तेजी का इतना अधिक अवधि-काल दोनों ग्रहों के मन्दगति होने के कारण प्राप्त होता है। इन दिनों बाजार बराबर तेज रहा। केवल ता. २६ को मंदी रही। उसका कारण यह था कि, उसदिन लग्नेश की षष्ठेश नेपच्यून के साथ १३५ अंश की अशुभ दृष्टि हो रही थी।

३—बुध-शनि का पञ्चमांश नामक दृष्टियोग।

अंशान्तर ७२। समय १५'।४५'।

दोनों त्रिकोणाधिपतियों की यह दृष्टि शुभ है। राशिमण्डल में एक दूसरे से तीसरे और ग्यारहवें स्थान में स्थित हैं; इस लिये भी यह दृष्टि शुभ है। तात्पर्य यह कि, शुभ ग्रहों का यह शुभ दृष्टियोग है। दोनों में बुध द्रष्टा और शनि दृश्य है। शनि की उत्तर क्रान्ति की गति घट रही है; इस लिये दोनों ग्रहों में जिस समय इस दृष्टियोग के दीप्तांश के अर्धभाग १ अंश २४ कला के तुल्य अन्तर होगा, उस समय से लेकर इस दृष्टियोग के होने तक शुभ फल— तेजी करेगा। वह समय ता० २ को २३'।४८' से ता० ३ सोमवार को १५'।४५' तक होता है। अत एव ता० ३ सोमवार को तेजी रही।

ता० ५ जुलाई १९५० बुधवार। फल ६ तेजी

१ बुध-हर्शल की राशियुति।

अंशान्तर ०। समय २'।३५'।

दोनों त्रिकोणाधिपतियों की यह संयोग वा युति नाम की शुभ दृष्टि है। दोनों ही शुभ ग्रह हैं। इस दृष्टि योग में द्रष्टा-दृश्य का सम्बन्ध नहीं होता। ऐसी दशा में जय-पराजय के नियमानुसार विजयी ग्रह का निश्चय करना पड़ता है। क्योंकि, विजयी ग्रह का ही फल हुआ करता है। उदाहरण में दोनों ही समानधर्मी

(शुभ ग्रह) हैं; इसलिये जयपराजय का नियम लागू नहीं होगा प्रत्युत दोनों ही दृष्टि-दीप्तांश के अर्धभाग ३ अंश ३० कला के तुल्य अन्तर रहने तक अपनी अपनी गति के द्वारा प्राप्त समय के अनुसार क्रान्ति-गति के घटने और बढ़ने के कारण युति होने से पहिले और बाद में उतने समय तक शुभ फल (तेजी) करनेवाले हैं। इन में हर्शल की उत्तर क्रान्ति की गति घट रही है; इसलिये वह दृष्टियोग के होने से पहिले और बुध की उत्तर क्रान्ति की गति बढ़ रही है; इस कारण वह अपना फल दृष्टियोग हो जाने के बाद करेगा। हर्शल का प्रभावकाल ता० ३ सोमवार को ११ं।४३'।१७'' से ता० ५ बुधवार को २ं।३५' तक और बुध का समय ता० ५ बुधवार को २ं।३५' से ता० ६ गुरुवार को १८ं।५४'।२०''तक निश्चित होता है। सारांश यह कि, दोनों ग्रहों के इस दृष्टि योग की ता० ३ सोमवार से ता० ६ गुरुवार तक की तेजी निश्चित हुई और वह सही निकली।

त० ६ जुलाई १९५० गुरुवार। फल १ तेजी

१—शुक्र—मंगल की त्रिकोण दृष्टि।
अंशान्तर १२०। समय ६ं।२२'।

लग्नेश तथा केन्द्रेश दोनों शुभग्रहों का यह शुभ दृष्टियोग है। शुक्र द्रष्टा और मंगल दृश्य ग्रह है। मंगल की दक्षिणक्रान्ति के बढ़ने के कारण, दृष्टियोग होने से पहिले दृष्टि-दीप्तांश के अर्धभाग २ अंश २० कला के बराबर अन्तर होने के समय से

लेकर दृष्टियोग होने तक तेजी करनेवाला है । वह समय ता० २ रविवार को १६'।८' से ता० ६ गुरुवार को ६'।२२' तक का प्राप्त होता है । फल यह हुआ कि, ता० २ और ४ को न्यूयार्क का बाजार बंद रहा । ता० ३ तथा ५ को तेजी हुई ।

ता० ७ जुलाई १९५० शुक्रवार । फल ४ तेजी

१–सूर्य–नेपच्यून का केन्द्रनामक अशुभ दृष्टियोग । अंशान्तर ९० । समय २'।१६' ।

दोनों ग्रहों में सूर्य आयेश होने से और नेपच्यून षष्ठेश होने से अशुभ है । दृष्टि भी अशुभ है । सूर्य द्रष्टा और नेपच्यून दृश्य है । नेपच्यून की दक्षिणक्रान्ति की गति बढ़ रही है, इसलिये दृष्टियोग होने से पहिले दृष्टि-दीप्तांश के अर्धभाग १ अंश ४५ कला के तुल्य अन्तर जिस समय दोनों ग्रहों में होगा, वहां से दृष्टियोग होने तक अशुभफल (मंदी) का सूचक है । वह समय ता० ५ बुधवार को ६'।१२' से ता० ७ शुक्रवार को २'।१६' तक का प्राप्त होता है ।

२—बुध—मंगल का केन्द्रनामक दृष्टियोग । अंशान्तर ९० । समय १८'।२१' ।

दोनों शुभ ग्रहों का यह दृष्टियोग अशुभ है । बुध द्रष्टा और मंगल दृश्य है । मंगल की दक्षिणक्रान्ति की गति बढ़ रही है, इसलिये दृष्टियोग के होने से पहिले दृष्टि-दीप्तांश के

अर्धभाग १ अंश ४५ कला का अन्तर जिस समय दोनों ग्रहों में होगा, उस समय से लेकर दृष्टियोग होने के समय तक मंदी करने वाला है। वह समय ता० ६ गुरुवार को १७ं।१३' से ता० ७ शुक्रवार को १८ं।२१' तक है।

इन दोनों दृष्टियोगों का प्रभावकाल ता० ५, ६ और ७ तक मंदी का सूचक था। परन्तु इन दिनों मंगल के दक्षिणशर-परिवर्तन की मुख्यता रहने से मंदी न हो कर तेजी हुई।

ता० १० जुलाई १९५० सोमवार। फल २०० तेजी

१—शुक्र—शनि का केन्द्रनामक दृष्टियोग। अंशान्तर ९०। समय ०ं।५८'।

लग्नेश शुक्र और केन्द्र-त्रिकोणाधिपति शनि; दोनों ही शुभ-ग्रह हैं। इनका यह दृष्टियोग सामान्यतः अशुभ है। किन्तु विशेषशास्त्र के नियमानुसार केन्द्र-त्रिकोणाधिपति शनि का लग्नेश शुक्र के साथ एकतर पूर्ण दृष्टिसम्बन्ध होने के कारण यही दृष्टियोग शुभफल करनेवाला हो जाता है। यहां पर विशेषता यह है कि, सामान्यशास्त्र से द्रष्टा शुक्र और दृश्यग्रह शनि होता है, परन्तु विशेषशास्त्र के नियमानुसार द्रष्टा शनि और दृश्यग्रह शुक्र हो जाता है। अतएव शुक्र की उत्तरक्रान्ति की गति के बढ़ने के कारण दृष्टियोग होने के पश्चात् दृष्टि-दोप्तांश के अर्धभाग १ अंश ४५ कला-तुल्य अन्तर दोनों ग्रहों में जिस समय होगा, वहां तक तेजी का सूचक है। वह समय ता० १० सोमवार को

०।५८' से ता० ११ मंगलवार को १५'।२४' तक का है। दोनों दिन इस दृष्टियोग की तेजी सही निकली।

२–सूर्य–बुध की राशियुति। अंशान्तर ०। समय २३'।४'

अशुभग्रह आयेश सूर्य के साथ शुभग्रह त्रिकोणेश बुध की एकराशि में यह युति हो रही है। बुध अस्त है। सूर्य की ही प्रधानता है। सूर्य की उत्तर–क्रान्ति की गति घट रही है; इसलिये युति होने से पहिले दृष्टि-दीप्तांश के अर्धभाग ३ अंश ३० कला का अन्तर सूर्य और बुध में जिस समय होगा, वहाँ से लेकर युति होने तक मन्दी का सूचक है। वह समय ता० ८ शनिवार को ६'।३४' से ता० १० सोमवार को २३'।४' तक का है। शनिवार तथा रविवार को बाजार बन्द रहा। सोमवार को इस दृष्टियोग का फल मंदी होना चाहिये था। परन्तु उसदिन शुक्र-शनि की पूर्ण दृष्टि और भावी बुध-हर्शल के क्रान्त्यंशसाम्य की प्रबलता होने से मंदी न होकर तेजी हुई।

ता० ११ जुलाई १९५० मंगलवार। फल ६५ तेजी

१–बुध—हर्शल का क्रान्त्यंशसाम्य। अंशान्तर ०। समय ४'।२६'।

दोनों ही त्रिकोणेश हैं। हर्शल पञ्चमेश है तो बुध नवमेश है। दोनों ही वस्तु की तुला–लग्न से दशमस्थान में स्थित हैं। यह

बड़ा राजयोग है। एक त्रिकोणाधिपति का दूसरे त्रिकोणाधिपति से सम्बन्ध होना आशा से अधिक विशेषफलदायक होता है। अतएव यह दृष्टियोग अत्यन्त प्रबल है। यहां पर जयपराजय का नियम इसलिये लागू नहीं होता कि, दोनों ही शुभग्रह हैं। दोनों की उत्तर क्रान्ति की गति घट रही है, इस कारण दृष्टियोग होने से पहिले बुध की स्वाचारिक गति के हिसाब से ता० ११ मंगलवार को ही ०।२५' से ४।२६' तक बुध का फलकारक समय होता है। और हर्शल की स्वाचारिक गति के हिसाब से ता० १० सोमवार को १२।५४' से ता० ११ मंगलवार को ४।२६' तक हर्शल का फल-कारक समय निश्चित होता है। इस महान दृष्टियोग की विशेष तेजी ता० १० को ही घटित हो चुकी है।

२—शुक्र—शनिका पूर्वागत केन्द्रनामक दृष्टियोग। अंशान्तर ६०।

इस दृष्टियोग का विवरण ता० १० जुलाई के निर्णय के साथ हो चुका है। विशेष-शास्त्र के नियमानुसार यह दृष्टियोग तेजी करनेवाला है। प्रभाव-काल ता० ११ मंगलवार को १५।२४' तक का होने से आज तेजी हुई।

ता० १२ जुलाई १६५० बुधवार। फल २ मंदी

१—बुध—गुरुका अष्टमांशरहित दृष्टियोग। अंशान्तर १३५। समय १६।५६'।

बुध त्रिकोणेश होने से शुभ और गुरु तृतीयेश तथा षष्ठेश होने

से अशुभ ग्रह है। गुरु द्रष्टा और बुध दृश्य है । स्थूलमान से यह दृष्टियोग त्रिकोण में स्थित ग्रहों का हो रहा है, अतः शुभ है। किन्तु गुरु के वक्री होने के कारण विपरीतफल-तेजी के स्थान में मंदी करनेवाला है । दृश्यग्रह बुध की उत्तर क्रान्ति की गति घट रही है, इसलिये जिस समय दृष्टि-दीप्तांश के अर्धभाग २ अंश ३७ कला और ३० विकला का अन्तर दोनों ग्रहों में होगा, उस समय से लेकर दृष्टियोग होने के समय तक निश्चित होता है। वह अवधि ता० ११ मंगलवार को १२'।२२' से ता० १२ बुधवार को १६'।५६' तक निश्चित होती है। ता० ११ में तेजी के योगों की प्रबलता से इस दृष्टि योग को अवसर नहीं मिला । आज ता० १२ बुधवार को इस दृष्टियोग की मन्दी हुई।

ता० १३ जुलाई १९५० गुरुवार। फल १४ तेजी

१—मंगल-नेपच्यून की भावी राशियुति। अंशान्तर०। समय ता० १४ शुक्रवार ५'।३०'।

मंगल केन्द्रेश होने से शुभ है और नेपच्यून षष्ठेश होने से अशुभ है। नेपच्यून उत्तरशर में होने से विजयी है। नेपच्यून की दक्षिणक्रांति की गति बढ़ रही है; इसलिये राशियुति होनेसे पहिले दृष्टि-दीप्तांश के अर्धभाग ३ अंश ३० कला का अन्तर दोनों ग्रहों में जिस समय होगा, उस समय से लेकर दृष्टियोग होने के समय तक मंदी का सूचक है। वह समय ता० ७ शुक्रवार को

५।१७, ६" से ता० १४ शुक्रवार को ५।३०' तक का निश्चित होता है।

२—चन्द्र-हर्शल की भावी राशियुति।

अंशान्तर०। समय १७।३०'।

चन्द्रमा केन्द्राधिपति होनेसे और हर्शल त्रिकोणाधिपति होने से शुभ है। दोनों ही शुभग्रह हैं; इसलिये जयपराजय का नियम लागू नहीं होता। दोनों की उत्तरक्रांतिकी गति घट रही है; इस कारण राशियुति होने से पहिले दृष्टि-दीप्तांश के अर्धभाग ३ अंश ३० कला का अन्तर दोनों ग्रहों में जिस समय होगा, वहां से लेकर दृष्टियोग होनेके समय तक तेजी करनेवाला है। वह समय ता० १३ गुरुवार को १२'।२०'।१५" से १७'।३३' तक है।

उपर्युक्त दोनों दृष्टियोग समानकोटि के हैं। एक का फल मंदी और दूसरे का फल तेजी है। परन्तु चन्द्र-हर्शल की राशियुति निरवकाश है—उसे दूसरा समय अपना फल करने को नहीं मिलता। मंगल नेपच्यून की राशियुति को फिर भी अवसर मिल सकता है। अतः चन्द्र-हर्शल की राशियुति की ही तेजी हुई।

ता० १४ जुलाई १९५० शुक्रवार। फल २७ तेजी

१—सूर्य-गुरु की अष्टमांशरहित दृष्टि। अंशान्तर १३५। समय १८'।३५'।

सूर्य आयेश होने से और गुरु तीसरे तथा छठे स्थान का स्वामी होने से अशुभ है। गुरु के वक्री होने के कारण यह

दृष्टियोग यद्यपि अशुभ फल का सूचक है; परन्तु यह दृष्टियोग त्रिकोण में हो रहा है; इसलिये शुभफलकारक हो जाता है। गुरु द्रष्टा और सूर्य दृश्य है। सूर्य की उत्तरक्रान्ति की गति घट रही है; इस कारण दोनों ग्रहों में जिस समय दृष्टि-दीप्तांश के अर्धभाग २ अंश ३७ कला और ३० विकला का अन्तर होगा, उस समय से लेकर दृष्टियोग होने के समयतक तेजी करनेवाला है। वह समय ता० १२ बुधवार को ६ं।५०' से ता० १४ शुक्रवार को १८ं।३५' तक है।

२—बुध-शुक्र की भावी दशमांशदृष्टि। अंशान्तर ३६। समय ता० १५ शनिवार ३ं।१८'।

लग्नेश तथा त्रिकोणेश का यह दृष्टियोग शुभ है। दोनों का द्विर्द्वादशस्थान-सम्बन्ध भी शुभ है। शुक्र द्रष्टा और बुध दृश्य है। दृश्यग्रह बुध की उत्तरक्रान्ति की गति घट रही है; इसलिये दृष्टियोग होने से पहिले, जिस समय बुध-शुक्र में दृष्टि-दीप्तांश के अर्धभाग ४२ कला का अन्तर होगा, उस समय से लेकर दृष्टि-योग होने के समय तक तेजी का द्योतक है। वह समय ता० १४ शुक्रवार को ८ं।४७ से ता० १५ शनिवार को ३ं।१८' तक है।

सारांश—आज के दोनों ही दृष्टियोग तेजी के थे; इस लिये तेजी हुई।

ता० १७ जुलाई १६५० सोमवार। फल १६५ तेजी

१–बुध नेपच्यून की पञ्चमांश दृष्टि। अंशान्तर ७२। समय १६ं।४७'।

बुध शुभग्रह है और नेपच्यून अशुभग्रह। दोनों की यह पञ्चमांशनामक दृष्टि शुभ है। एक दूसरे से तीसरे और ग्यारहवें स्थान में स्थित हैं, इस कारण भी यह दृष्टियोग शुभ है। बुध द्रष्टा और नेपच्यून दृश्य है। नेपच्यून की दक्षिणक्रान्ति की गति बढ़ रही है, इसलिये दृष्टियोग होने से पहिले, दृष्टि-दीप्तांश के अर्धभाग १ अंश २४ कला के बराबर अन्तर दोनों ग्रहों में जिस समय होगा, वहाँ से लेकर दृष्टियोग होने के समय तक तेजी करनेवाला है। वह समय ता० १७ सोमवार को ८ं।१६' से १६ं।४७' तक है। अतएव आज तेजी हुई।

ता० १८ जुलाई १६५० मंगलवार। फल १३४ मंदी

१–चन्द्र-गुरु की प्रतियोगदृष्टि। अंशान्तर १८०। समय १०ं।११'।

चन्द्र दशमेश होने से शुभ और गुरु तृतीय तथा षष्ठ स्थान का स्वामी होने से अशुभग्रह है। दोनों का यह दृष्टियोग अशुभ है। चन्द्र द्रष्टा और गुरु दृश्य है। अतएव शुभफल प्राप्त होता है, किन्तु दृश्यग्रह गुरु के वक्री होने से विपरीत फल अर्थात् तेजी की जगह मंदी करनेवाला है। यद्यपि दृश्यग्रह गुरु की

दक्षिणक्रान्ति को गति बढ़ रही है, इसलिये दृष्टियोग होने से पहिले पूर्वोक्त नियमानुसार फल होना चाहिये था; परन्तु गुरु के वक्री होने के कारण दृष्टियोग हो जाने के बाद दृष्टि-दीप्तांश के अर्धभाग ३ अंश ३० कला का अन्तर जिस समय तक होगा, उस समय तक मंदी करनेवाला है। वह समय ता० १८ मंगलवार को १०'।११' से १६'।२३'।५१" तक है।

२–चन्द्र-गुरु का क्रान्त्यंशसाम्य। अंशान्तर ०। समय १३'।२१'।

शुभाशुभग्रहों के क्रान्त्यंशसाम्य में चन्द्रमा उत्तरदिशा में रहने के कारण विजयी हो जाता है। किन्तु वक्री गुरु के साथ दृष्टियोग होने से उस समय दोनों ग्रहों में होनेवाली प्रतियोग दृष्टि को ही प्रबलरूप दे देता है। इसका प्रभावकाल पूर्वोक्त क्रमानुसार ता० १८ मंगलवार को १३'।२१' से १४'।२०'।२३" तक का है, जो इष्टकाल १४'।०' पर विद्यमान था। अतएव आज विशेष मंदी हुई।

विशेषः—१ मङ्गल-प्लूटो की षडंश दृष्टि तथा २ बुध-मङ्गल की पञ्चमांशदृष्टि भी ता० १८ मङ्गलवार को तेजी करनेवाली थीं। परन्तु ये दोनों दृष्टियाँ चन्द्र-गुरु की प्रतियोगदृष्टि और क्रान्त्यंश-साम्य की अपेक्षा दुर्बल थीं, इसलिये इन दोनों दृष्टियों को तेजी करने का आज अवसर नहीं मिला।

ता० १६ जुलाई १६५० बुधवार । फल ३७ तेजी

१–बुध-हर्शल की द्वादशांश दृष्टि । अंशान्तर ३० ।

समय १७'।४५' ।

दोनों त्रिकोणस्थानों के अधिपति हर्शल और बुध का यह शुभदृष्टियोग है । हर्शल द्रष्टा और बुध दृश्य है । दृश्यग्रह बुध की उत्तरक्रान्ति की गति घट रही है, इसलिये दृष्टियोग होने से पहिले दोनों ग्रहों में जिस समय दृष्टि–दीप्तांशों के अर्धभाग ३५ कला का अन्तर होगा, उस समय से लेकर दृष्टियोग होने के समय तक तेजी करनेवाला है । वह समय आज प्रातः १०'।१५' से १७'।४५' तक है ।

२–शनि-मङ्गल का भावी क्रान्त्यंशसाम्य । अंशा-न्तर ०। समय ता० २० गुरुवार ३'।४४' ।

दोनों शुभग्रहों का यह दृष्टियोग शुभ है । शनि की उत्तर-क्रान्ति की घट रही है और मङ्गल की दक्षिणक्रान्ति की गति बढ़ रही है, इसलिये प्रभावकाल के निर्णयक्रम से इन दोनों ताराग्रहों में शनि उत्तरशर में होने के कारण विजयी हो कर ता० १८ मंगलवार को १०'।३६' से ता० २० गुरुवार को ३'।४४' तक तेजी करनेवाला है । ता० १८ में इस दृष्टियोग की तेजी इसलिये नहीं हुई कि, चन्द्रगुरु का क्रान्त्यंशसाम्य निरवकाश था । अतएव इस दृष्टियोग को आज ही तेजी करने का अवसर मिला ।

ता० २० जुलाई १९५० गुरुवार । फल ३१ तेजी

आज भिन्नराशिस्थ ग्रहों का कोई दृष्टियोग नहीं है । लग्नस्थित चन्द्र के साथ नेपच्यून की चत्वारिंशांशनामक ६ अंश के अन्तर की शुभ दृष्टि और लग्न से ग्यारहवें स्थान में स्थित बुध-प्लूटो की भी चत्वारिंशांश दृष्टि हो रही है । दोनों दृष्टियां शुभ हैं । इष्टकाल पर ये दृष्टियां हो रही है, इसलिये आज तेजी हुई ।

ता० २१ जुलाई १९५० शुक्रवार । फल ११ मंदी

१—बुध—शनि की दशमांशदृष्टि । अंशान्तर ३६ । समय १४'।४१' ।

केन्द्र—त्रिकोणाधिपति शनि और द्वितीय त्रिकोणाधिपति बुध का यह दृष्टियोग तो शुभ है । किन्तु दोनों ग्रहों में जो द्विर्द्वादशस्थान का सम्बन्ध हो रहा है, वह अशुभ है । इसलिये शुभ दृष्टियोग होते हुए भी साधारण मंदी का द्योतक है । बुध द्रष्टा और शनि दृश्य है । शनि की उत्तर क्रान्ति की गति घट रही है, इस कारण दृष्टियोग होने से पहिले दोनों ग्रहों में जिस समय दृष्टिदीप्तांश के अर्धभाग ४२ कला के तुल्य अन्तर होगा, वहां से लेकर दृष्टियोग होने के समय तक मंदी करने वाला यह दृष्टियोग है । वह समय आज प्रातः ५'।३०' से १४'।४१' तक है ।

आज विशेषरूप से ध्यान देने की बात यह है कि, राफाइल की 'एफीमरी' में चंद्र-प्लूटो की षडंशदृष्टि और चन्द्र-मंगल की

राशियुति का जो समय दिया गया है, वह अशुद्ध है–उस समय से पहिले ही ये दृष्टियां हो चुकी हैं। इष्टकाल के स्पष्ट ग्रहों के गणित से यह बात स्पष्ट हो जाती है। इसलिये निर्णय-कर्ता को दैनिक ग्रहगणित साधन करके ही दृष्टियोगों के समय तथा शुभाशुभ फल का निर्णय करना श्रेयस्कर होगा। अन्यथा कुछ का कुछ फल निश्चय होगा और उससे कार्य में हानि होगी।

ता० २४ जुलाई १९५० सोमवार। फल २९ तेजी

१–बुध-प्लूटो की एक ही राशि में भावी युतिदृष्टि। अंशान्तर ०। समय ता० २५ जुलाई मंगलवार १०'।४८'।

दोनों शुभग्रहों का यह शुभ दृष्टियोग है। दोनों ग्रहों की उत्तर क्रान्ति की गति घट रही है, इसलिये दोनों ग्रहों में जिस-समय दृष्टि-दीप्तांशों के अर्धभाग ३ अंश और ३० कला का अन्तर होगा, उस समय से लेकर दृष्टियोग (राशियुति) होने के समय तक तेजी करनेवाला यह दृष्टियोग है। वह समय ता० २३ रवि-वार को १२'।२' से ता० २५ मंगलवार को १०'।४८' तक है।

विशेषः—राशिकुण्डली में आयेश सूर्य के साथ बुध–प्लूटो का सहावस्थान-सम्बन्ध हो रहा है, किन्तु दोनों ग्रह सूर्य से अधिक दूर हैं–युतिदृष्टि के दीप्तांशों के बाहर हैं। इसलिये सूर्य का इन दोनों ग्रहों पर कोई प्रभाव नहीं है। यदि स्थूलरूप से एक राशिमें सहावस्थान-सम्बन्धको मान भी लिया जाय, तो भी सूर्य तथा

बुध-प्लूटो में इष्टकाल पर १४ अंश २७ कला और ३० विकला का अन्तर है, जिससे यहां पर एक ही राशि में होनेवाला चतुर्विंशांश नामक शुभ दृष्टियोग हो रहा है, इस कारण सूर्य का सहावस्थान-सम्बन्ध भी तेजीकारक ही है।

२—मंगल-गुरु की भावी अष्टमांशरहित दृष्टि। अंशान्तर १३५। समय ता० २६ बुधवार ३ं।२४'।

मंगल केन्द्रेश होने से शुभ और गुरु तृतीय तथा षष्ठस्थान का अधिपति होने से अशुभ ग्रह है। दोनों ग्रहों में जो षडष्टक हो रहा है, वह भी अशुभ है। किन्तु गुरु के वक्री होने के कारण शुभ-फल (तेजी) करनेवाला यह दृष्टियोग है। मंगल द्रष्टा और गुरु दृश्यग्रह है। गुरु की दक्षिणकान्ति की गति बढ़ रही है; इसलिये दृष्टियोग होने से पहिले दोनों ग्रहों में जिस समय दृष्टि-दीप्तांश के अर्धभाग २ अंश ३७ कला और ३० विकला का अन्तर होगा, उस समय से लेकर दृष्टियोग होने तक तेजी का सूचक है। वह समय ता० २२ शनिवार को ०ं।११' से ता० २६ बुधवार को ३ं।२४' तक का निश्चित होता है।

ता० २५ जुलाई १९५० मंगलवार। फल २२ तेजी

१—मङ्गल-गुरुका भावी अष्टमांशरहित दृष्टियोग।

अंशान्तर १३५। समय ता० २६ जुलाई बुधवार ३'।२४'।

इस दृष्टियोग का विवरण ता० २४ सोमवार के निर्णय में आ चुका है। आज भी इस दृष्टियोग की तेजी का अवसर है।

२—सूर्य-नेपच्यून को भावी पञ्चमांशदृष्टि। अंशान्तर७२। समय ता० २६ बुधवार ४'।१५'।

दोनों अशुभ ग्रहों का यह दृष्टियोग शुभ है। एक दूसरे से तृतीय-एकादशस्थान में स्थित हैं, इसलिये भी यह दृष्टियोग शुभ है। सूर्य द्रष्टा और नेपच्यून दृश्य है। नेपच्यून की दक्षिणक्रान्ति की गति बढ़ रही हैं, इस कारण दृष्टियोग होने से पहिले जिस समय इन दोनों ग्रहों में दृष्टि-दीप्तांश के अर्धभाग १ अंश २४ कला का अन्तर होगा, उस समय से लेकर दृष्टियोग होने के समय तक यह दृष्टियोग तेजी करनेवाला है। वह समय ता० २४ सोमवार को १६'।४१' से ता० २६ बुधवार को ४'।१५' तक निश्चित होता है।

३—शुक्र—शनि को भावी पञ्चमांशदृष्टि। अंशान्तर ७२। समय ता० २६ जुलाई बुधवार ६'।५२'।

लग्नेश तथा केन्द्र-त्रिकोणाधिपति शनि का यह दृष्टियोग शुभ है। एक दूसरे से तृतीय-एकादशस्थान में स्थित हैं, इस

लिये भी यह दृष्टियोग शुभ है। शुक्र द्रष्टा और शनि दृश्यग्रह है। शनि की उत्तर क्रान्ति की गति घट रही है, इस कारण दृष्टियोग होने से पहिले दोनों ग्रहों में जिस समय —दीप्तांश के अर्ध-भाग १ अंश २४ कला का अन्तर होगा, उस ससय से लेकर दृष्टियोग होने के समय तक यह दृष्टियोग तेजी करनेवाला है। वह समय ता. २५ मंगलवार को ८'।०' से ता. २६ बुधवार को ६'।५२' तक है।

४—चन्द्र—प्लूटो की भावीं दैनिक त्रिकोणदृष्टि। अंशान्तर १२०। समय १४'।४०'।

दोनों शुभ ग्रहों का यह दृष्टियोग शुभ है। प्लूटो द्रष्टा और चन्द्र दृश्य है। चन्द्र—प्लूटो में जिस समय दृष्टि—दीप्तांश के अर्धभाग २ अंश २० कला का अन्तर रहेगा, उस समय से लेकर दृष्टियोग होने के समय तक यह दृष्टियोग तेजी करनेवाला है। वह समय आज प्रातः १०'।४६'।५" से १४'।४०' तक है।

५—चन्द्र-बुध की भावी दैनिक त्रिकोणदृष्टि। अंशान्तर १२०। समय १५'।१३'।

केन्द्र—त्रिकोणाधिपति बुध—चन्द्र का यह दृष्टियोग चन्द्र-प्लूटो की त्रिकोणदृष्टि से बलवान् और विशेष शुभ है। इस दृष्टियोग का प्रभावकाल पूर्वोक्त निर्णयक्रम के अनुसार आज प्रातः १०'।४८'।५५" से १५'।१३' तक का निश्चित होता है।

६—शुक्र-हर्शल की भावी राशियुति-संयोगदृष्टि।
अंशान्तर०। समय ता० २८ जुलाई शुक्रवार ६ं।४'।

लग्नेश शुक्र तथा त्रिकोणेश हर्शल की यह एकराशि में होने वाली युति लग्न से दशम स्थान में होने के कारण विशेष शुभ है। दोनों ग्रहों की उत्तर क्रान्ति की गति घट रही है, इसलिये दोनों ग्रह मिलकर एकसाथ आपस में जिस समय दृष्टि-दीप्तांश के अर्धभाग ३ अंश ३० कला के अन्तर पर होंगे, उस समय से लेकर दृष्टियोग होने के समय तक तेजी करनेवाले हैं। वह समय ता० २५ मंगलवार को ७ं।४२' से ता० २८ शुक्रवार को ६ं।४' तक है।

सारांश यह कि, आज के अतीत, विद्यमान तथा भावी सभी दृष्टियोग तेजी के सूचक थे, इसलिये तेजी हुई।

ता० २६ जुलाई १९५० बुधवार। फल ६२ तेजी

१—शुक्र-हर्शल की भावी संयोगदृष्टि।
अंशान्तर ०। समय ता० २८ शुक्रवार ६ं।४'।

इस दृष्टियोग का विवरण ता०२५ जुलाई मंगलवार के दृष्टियोगों के निर्णय में हो चुका है। यह दृष्टियोग तेजी का सूचक है।

२—शुक्र-गुरु की भावी त्रिकोणदृष्टि।
अंशान्तर १२०। समय ता० २७ जुलाई गुरुवार को १२ं।१५'।

दोनों में शुक्र शुभग्रह और गुरु अशुभ ग्रह है। दोनों का यह दृष्टियोग तो स्वभावतः शुभ है, किन्तु गुरु के वक्री होने के कारण अशुभ फल करनेवाला है। गुरु द्रष्टा और शुक्र दृश्य है। शुक्र की उत्तर क्रान्ति की गति घट रही हैं, इसलिये दृष्टियोग होने से पहिले दोनों ग्रहों में जिस समय दृष्टि-दीप्तांश के अर्धभाग २ अंश २० कला का अन्तर होगा, वहाँ से लेकर दृष्टियोग होने के समय तक मंदी करनेवाला है। वह समय ता० २५ मंगलवार को १६ं।४०' से ता० २७ जुलाई गुरुवार को १२ं।१५' तक है।

सारांश—आज के दोनों दृष्टियोगों में शुक्र-हर्शल का राशि-युतिनामक दृष्टियोग ही प्रबल था, इसलिये तेजी हुई।

ता० २७ जुलाई १९५० गुरुवार। फल ७ तेजी

१—शुक्र-हर्शल की भावी संयोगदृष्टि।
अंशान्तर ०। समय ता० २८ जुलाई शुक्रवार ९ं।४'।

ता० २५ जुलाई मंगलवार के दृष्टियोगों के विवरण में इस दृष्टियोग का निर्णय हो चुका है। तदनुसार यह दृष्टियोग तेजी करनेवाला है।

२—बुध-मङ्गल की भावी षष्ठांशदृष्टि।
अंशान्तर ६०। समय ता० २८ शुक्रवार ६ं।७'।

दोनों शुभग्रहों का यह दृष्टियोग शुभ है। बुध द्रष्टा और मंगल दृश्य ग्रह है। मंगल की दक्षिण क्रान्ति की गति बढ़ रही है, इस कारण दृष्टियोग होने से पहिले जिस समय दोनों ग्रहों में दृष्टि-दीप्तांश के अर्धभाग १ अंश १० कला का अन्तर होगा, उस समय से लेकर दृष्टियोग होने के समय तक तेजी करनेवाला है। वह समय ता० २७ गुरुवार को ११'।२०' से ता० २८ शुक्रवार को ६'।७' तक का है।

इन दोनों दृष्टियोगों के अतिरिक्त बुध-शुक्र तथा बुध-हर्शल के भावी केन्द्रार्धनामक दो अशुभ दृष्टियोगों का प्रभाव-काल भी आज विद्यमान था, परन्तु उपर्युक्त दोनों दृष्टियोगों को प्रबलता से तेजी तो हुई, पर कम मात्रा में हुई।

ता० २८ जुलाई १९५० शुक्रवार। फल ६ तेजी

१–शनि मङ्गल की भावी दशमांशदृष्टि।

अंशान्तर ३६। समय ता० २९ शनिवार ११'। ८'।

दोनों शुभ ग्रहों का यह दृष्टियोग शुभ है। दोनों ग्रहों में जो द्विर्द्वादशस्थान—सम्बन्ध हो रहा है, वह भी शुभ है। शनि द्रष्टा और मङ्गल दृश्य है। मङ्गल की दक्षिण क्रांति की गति बढ़ रही है; इस लिये दृष्टियोग होने से पहिले दोनों ग्रहों में जिस समय दृष्टि-दीप्तांश के अर्धभाग ४२ कला का अन्तर होगा, उस समय से लेकर दृष्टियोग होने के समय तक तेजी करनेवाला है। वह समय ता० २७ गुरुवार को २०।५' से ता० २९ शनिवार को ११'।८' तक है। आज यही एक दृष्टि योग था, जिससे तेजी हुई।

ता० ३१ जुलाई १९५० सोमवार । फल ४२ मंदी

१—चन्द्र—गुरु का क्रान्त्यंशसाम्य ।

अंशान्तर ० । समय प्रातः ७' । ३९' ।

चन्द्र शुभ ग्रह और गुरु अशुभ ग्रह है । दोनों में जयपराजय के नियमानुसार गुरु विजयी हो जाता है। गुरु की दक्षिण क्रान्ति की गति यद्यपि बढ़ रही है, परन्तु गुरु के वक्री होने के कारण प्रभाव-काल के नियम के विपरीत—दृष्टियोग हो जाने के बाद अपने दीप्तांश के अर्धभाग की अवधि तक—ता० ३१ जुलाई सोमवार से ता० २ अगस्त बुधवार तक मंदी का सूचक है ।

ता० १ अगस्त १९५० मंगलवार । फल ४१ मंदी

राशि कुण्डली

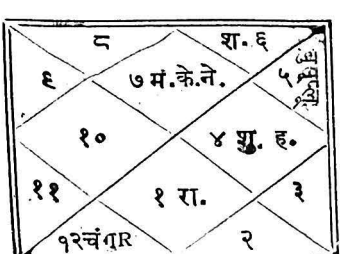

नवांश कुण्डली

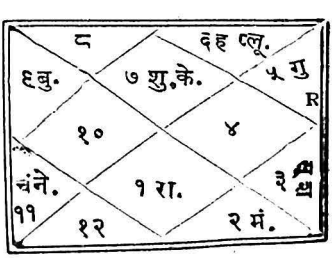

इन कुण्डलियों में जिस ग्रह के साथ (R) यह चिह्न लगा हो, उसे वक्री समझना चाहिये ।

आज के दृष्टियोग और उनका विवरण ।

१—चन्द्र-शनि की षष्ठ्यंशरहितदृष्टि।
अंशान्तर १७४। समय १३'।१६'।५४"।

केन्द्र-त्रिकोणाधिपति चन्द्र-शनि का यह दृष्टियोग दोनों में परस्पर पूर्णदृष्टि होने से तेजी करनेवाला सिद्ध होता है। किन्तु यहाँ पर शनि द्रष्टा और चन्द्र दृश्य हो जाता है। दृश्यग्रह चन्द्र इष्टकाल पर वक्री गुरु के साथ सहावस्थान-सम्बन्ध कर रहा है और साथही एक राशिगत विंशांशदृष्टि भी कर रहा है, इसलिये तेजी के बदले मंदीकारक हो जाता है। चन्द्र की दक्षिण क्रान्ति की गति घट रही है; इस कारण दृष्टियोग हो जाने के बाद, दृष्टि-दीप्तांश के अर्धभाग ३ अंश २३ कला का अन्तर जिस समय तक रहेगा; मंदीकारक है। वह समय आज १३'। १६'। ५४" से १६'। ३'। १७" तक है।

२-बुध—नेपच्यून की भावी अष्टमांशरहितदृष्टि।
अंशान्तर ४५। समय २०'।३७'।

त्रिकोणेश बुध के साथ षष्ठेश नेपच्यून का यह अशुभ दृष्टि-योग है। बुध द्रष्टा और नेपच्यून दृश्य है। नेपच्यून की दक्षिण क्रान्ति की गति बढ़ रही है; इसलिये दृष्टि-योग होने से पहिले, दोनों ग्रहों में जिस समय दृष्टि-दीप्तांश के अर्धभाग ५२ कला और ३० विकला का अन्तर होगा, उस समय से लेकर दृष्टियोग होने के समय तक मंदी करनेवाला है। किन्तु यह दृष्टियोग

त्रिरेकादशस्थानस्थित ग्रहों का हो रहा है; इस कारण साधारण तेजी करनेवाला है। वह समय आज ०।२२'।३६" से २०।३७' तक का है।

सारांश—बुध-नेपच्यून की भावी अष्टमांशरहित दृष्टि से चन्द्र-शनि की षष्ठ्यंशरहित दृष्टि की प्रबलता से आज मंदी हुई।

ता० २ अगस्त १९५० बुधवार। फल ५० मंदी

राशि कुण्डली

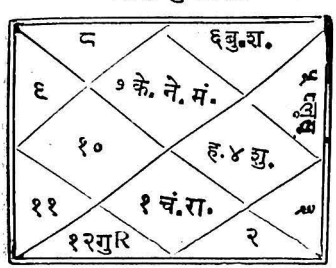

नवांशकुण्डली

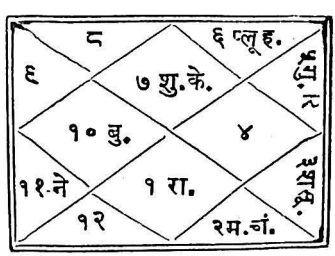

आज के दृष्टियोग और उनका विवरण।

१—शुक्र—नेपच्यून की भावी केन्द्र दृष्टि।

अंशान्तर ९०। समय ता० ३ अगस्त गुरुवार २३'।४१'।

लग्नेश शुक्र शुभग्रह और षष्ठेश नेपच्यून अशुभग्रह है। दोनों का यह अशुभ दृष्टियोग है। शुक्र द्रष्टा और नेपच्यून दृश्य है। नेपच्यून की दक्षिण क्रान्ति की गति बढ़ रही है; इसलिये दृष्टियोग होने से पहिले दोनों ग्रहों में जिस समय दृष्टिदीप्तांश के अर्धभाग १ अंश ४५ कला का अन्तर होगा; उस समय से लेकर

दृष्टियोग होने के समय तक यह दृष्टियोग मंदी करनेवाला है। वह समय ता० २ बुधवार को ५°।२४'।२५" से ता ३ गुरुवार को २३°।४१' तक है।

२—बुध-गुरु की अतीत षष्ठ्यंशरहित दृष्टि।

अंशान्तर १७४। समय ता० १ मंगलवार १८°।१४'।

शुभाशुभ ग्रहों का यह दृष्टियोग अशुभ है। बुध द्रष्टा और गुरु दृश्यग्रह है। गुरुकी दक्षिणक्रान्ति की गति बढ़ रही है, किन्तु गुरु के वक्री होने से दृष्टियोग हो जाने के बाद दोनों ग्रहों में जिस समय दृष्टि-दीप्तांश के अर्धभाग ३ अंश २३ कला का अन्तर रहेगा, वहां तक मंदी करनेवाला है। वह समय ता १ मंगलवार को १८°।१४' से ता० ३ गुरुवार को प्रातः ७ बजे तक है।

३—चन्द्र-हर्शल की भावी केन्द्रदृष्टि।

अंशान्तर ९०। समय १६°।९'।

दोनों शुभग्रहों का यह दृष्टियोग अशुभ है। चन्द्र द्रष्टा और हर्शल दृश्य है। हर्शल की उत्तरक्रान्ति की गति घट रही है; इसलिये दृष्टियोग होने से पहिले, जिस समय दोनों ग्रहों में दृष्टि-दीप्तांश के अर्धभाग १ अंश ४५ कला का अन्तर होगा, उस समय से लेकर दृष्टियोग होने के समयतक मंदी करनेवाला है। वह समय आज १२°।४७'।८' से १६°।९' तक है।

सारांश—आज के तीनों ही दृष्टियोग मंदीके थे; इस लिये मंदी हुई।

ता० ३ अगस्त १९५० गुरुवार । फल २५ मंदी

राशिकुण्डली

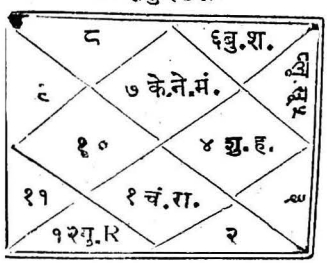

नवांशकुण्डली

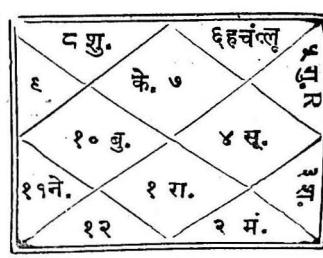

आज के दृष्टियोग और उनका विवरण ।

१—शुक्र-नेपच्यून की भावी केन्द्रदृष्टि। अंशान्तर ९०। समय २३'।४१'।

इस दृष्टियोग का विवरण ता० २ अगस्त बुधवार के दृष्टियोगों के साथ लिखा जा चुका है। यह दृष्टियोग मंदी का सूचक है। आज भी इस दृष्टियोग को मंदी करने का अवसर है।

२—सूर्य-शनि की भावी दशमांशदृष्टि। अंशान्तर ३६। समय ता० ४ शुक्रवार ८'।३७'।

शुभाशुभ ग्रहों का यह दृष्टियोग तो शुभ है। किन्तु दोनों में जो द्विर्द्वादशस्थान का सम्बन्ध हो रहा है, वह अशुभ है। सूर्य द्रष्टा और शनि दृश्य है। शनि की उत्तरक्रान्ति की गति घट रही है; इसलिये दृष्टियोग होने से पहिले, दोनों ग्रहों में जिस समय

दृष्टि-दीप्तांश के अर्धभाग ४२ कला का अन्तर होगा, उस समय से लेकर दृष्टियोग होने के समय तक मंदी करनेवाला है। वह समय ता० ३ गुरुवार को १३'।१'।११" से ता० ४ शुक्रवार को ८'।३७' तक है।

सारांश—आज के दोनों ही दृष्टियोग मंदी के थे; इसलिये मंदी हुई।

ता ४ अगस्त १९५० शुक्रवार। फल २० मंदी

राशिकुण्डली

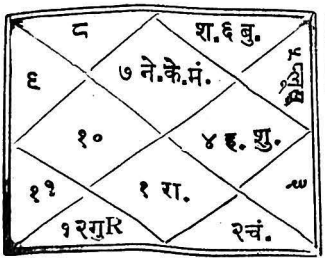

नवांशकुण्डली

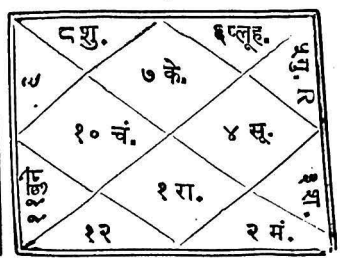

आज के दृष्टियोग और उनका विवरण।

आज एफीमरी (अंग्रेजी पञ्चांग) में दिये हुए दृष्टियोगों में से इष्टकाल पर कोई दृष्टियोग नहीं था। केवल चन्द्र-नेपच्यून की विंशांशरहित अशुभ दृष्टि थी; इसलिए मंदी हुई।

श्री विश्वेश्वर प्रेस, बुलानाला, बनारस सिटी।

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
Acc. No. 23747
Date 18.3.68